www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 26 मार्च 2017 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 26 मार्च 2017 से 01 अप्रैल 2017

चैत्र कृ. – 13 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 68, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## हिन्दी पुत्री पाठशाला सी.सै. खन्ना में मनाया गया ऋषि बोधोत्सव

हिन्दी पुत्री पाठशाला सी.सै. खन्ना में ऋषि बोधोत्सव बड़ी श्रद्धा से मनाया गया जिसमें स्थानीय डी.ए.वी. संस्थाओं–हिन्दी पुत्री पाठशाला सी.सै. डी.ए.वी. मॉडल सी.सै. स्कूल, डी.ए.वी. पब्लिक सी.सै. स्कूल, वेद मन्दिर मॉडल हाईस्कूल, खन्ना के अध्यापक–अध्यापिकाओं, छात्र–छात्राओं तथा आर्य समाज खन्ना के सदस्यों ने भाग लिया। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। मुख्यातिथि द्वारा ज्योति प्रज्ज्वलन तथा ध्वजारोहण किया गया। मैनेजर श्रीमती सरोज कुन्दरा जी ने महर्षि दयानन्द जी के समाज पर किए उपकारों का स्मरण करते हुए कहा कि स्वामी जी ने नारी शिक्षा, छुआछूत, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई तथा नारी सशक्तिकरण

का आधार बनाया। मैनेजर साहिबा ने मुख्यातिथि प्रि. शाम सुन्दर जी का परिचय देते हुए कहा कि इनका स्थानीय डी.ए.वी. संस्थाओं से जुड़ना संस्थाओं के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने बताया कि श्री शाम सुन्दर जी ने कई बार रक्त दान दिया तथा इन्हें 8 बार स्टेट अवार्ड से सम्मानित किया गया। नर सेवा नारायण सेवा में विश्वास रखते हुए ज़रूरतमंदों की सहायता करने से कभी पीछे नहीं हटे। विशेषातिथि श्रीमती अमरजीत कौर एवं स. सुच्चा सिंह जी कैनेडा निसासी के बार में बताते हुए मैनेजर साहिबा ने कहा कि विदेश में रहते हुए भी अपनी संस्कृति से जुड़े रहना, स्वाभाविक विनम्रता और दानवीरता की एक मिसाल है।

इस अवसर पर भजन–गायन प्रतियोगिता कराई गई और मुख्य आकर्षण रही स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर तैयार की गई नाटिका जिसमें सभी स्थानीय डी.ए.वी. संस्थाओं तथा वेद मन्दिर मॉडल हाईस्कूल के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया।

मुख्यातिथि द्वारा भजन–गायन प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किए। प्रि. श्री शाम सुन्दर जी ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए शिक्षा और खेल जगत में नाम कमाने के साथ–साथ नैतिक मूल्यों से जुड़े रहने की प्रेरणा दी। प्रिंसीपल श्री रजनी वर्मा जी बच्चों की स्वामी दयानन्द जी के जीवन की कठिनाइयों का वर्णन करते हुए उनका अपने सत्यपथ पर अडिग रहने तथा समाज सुधार के पथ पर निरंतर प्रयासरत रहने का ज़िक्र किया तथा बच्चों को उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अन्त में प्रि. अनिता वर्मा जी द्वारा आए हुए सभी मेहमानों का धन्यवाद किया गया।

## हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर में 'वैश्वीकरण के दौर में गांधी की प्रासंगिकता' पर हुई संगोष्ठी

हंसराज महिला महाविद्यालय के प्रांगण में कॉलेज प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन के कुशल एवं योग्य नेतृत्व के अधीन गांधीयन स्टडी सैंटर के सौजन्य से (वैश्वीकरण के क्षेत्र में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता) विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में श्रीमान एस.के. शर्मा (डायरैक्टर पब्लिकेशन, डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली) मुख्य वक्ता डॉ. ए.डी. मिश्रा (डिप्टी डायरैक्टर, नैशनल गांधीयन म्यूजियम, नई दिल्ली) एवं डॉ. सतीश कुमार (भूतपूर्व रजिस्ट्रार, डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी, जालन्धर) उपस्थित हुए।

डी.ए.वी. गान से संगोष्ठी का शुभारम्भ किया गया। डॉ. राजीव (को–आरडीनेटर गांधीयन स्टडी सैंटर) ने संगोष्ठी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि गांधी सशक्त राष्ट्रनिर्माता थे आज के वैश्वीकरण युग में गांधीवादी विचारधारा की अति आवश्यकता है। कॉलेज प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने मुख्यातिथि का हार्दिक अभिनंदन करते हुए उनके सन्तुलनात्मक व्यक्तित्व की प्रंशसा की एवं संस्था को निरन्तर आगे अग्रसर रहने की प्रेरणा देते हुए संगोष्ठी की सफलता हेतु कामना की।

मुख्यातिथि श्रीमान एस.के. शर्मा ने इस संगोष्ठी के चिन्तन का हिस्सा बनाने हेतु संस्था के प्रति आभार व्यक्त किया। सत्य का अनुसंधान निरन्तर करते रहने पर बल देते हुए उन्होंने पूर्ण सत्य को प्राप्त करने के स्थान पर सत्य की अनवरत खोज करने को बेहतर बताया और प्राचार्या डॉ. अजय सरीन और उनके प्राध्यापक वर्ग को शोध की परम्परा को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. ए.डी. मिश्रा ने गांधी जी के जीवन एवं दर्शन पर बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा गांधी जी का विचार है कि सर्वोत्तम से पहले उत्तम बनना अति आवश्यक है। जीवन में सत्यता, नैतिकता, मानवता, त्याग एवं सत्य की खोज की आवश्यकता है। संगोष्ठी में दो तकनीकी सत्र समानांतर चले जिसमें लगभग 40 से अधिक प्रतिनिधियों ने शोध–पत्र प्रस्तुत किए, 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं गांधीवादी दर्शन पर अमूल्य विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी के अन्त में समापन समारोह के अन्तर्गत मुख्यातिथि डॉ. राहुल नरेश जोशी (डिप्टी डायरैक्टर, राज्य सभा सचिवालय, नई दिल्ली) उपस्थित रहे।

संगोष्ठी के अन्त में डॉ. राजीव ने मुख्यातिथि, विद्वान वक्ताओं, प्राचार्या एवं प्रतिनिधियों के प्रति सहृदय आभार व्यक्त किया। मंच का संचालन श्रीमती रमनीता सैनी शारदा ने किया। संगोष्ठी का सफलतापूर्वक समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ९

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org



ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 26 मार्च 2017 से 01 अप्रैल 2017

## बड़े-छोटे सबको नमः

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।**
**यजाम देवान् यदि शक्नवाम, मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः।।**

ऋग् 1.27.13

ऋषिः **आजीगर्तिः शुनः शेषः।** देवता **विश्वेदेवाः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(महद् भ्यः नमः)** [ज्ञान और गुणों में] महानों को नमः **(अर्भकेभ्यः नमः)** छोटों को नमः, **(युवभ्यः नमः)** युवकों को नमः, **(आशिनेभ्यः नमः)** वयोवृद्धों को नमः। **(यदि शक्नवाम)** जहाँ तक [हम] समर्थ हों **(देवान्)** विद्वानों को **(यजाम)** सत्कृत करें। **(देवाः)** हे विद्वानों! **(ज्यायसः)** अपने से बड़े के **(शंसं)** स्तवन को [मैं] **(मा आवृक्षि)** न छोडूँ।

●मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे अन्यों के प्रति अभिवादन आदि उचित शिष्टाचार का पालन करना होता है। मैं भी बड़े छोटे सबको अभिवादन करता हूँ; कृत्रिम और दिखावटी नहीं, किन्तु अन्तर्मन से 'नमः' करता हूँ। 'नमः' का मूल अर्थ है झुकना। झुकना सिर से भी होता है, मन से भी। राजा, राज्याधिकारी, माता, पिता, गुरु, अतिथि, साधु, संन्यासी, शिशु, कुमार, विद्यार्थी, युवक, वृद्ध, स्वामी, सेवक प्रत्येक से मिलने पर हृदय में जो आदर, श्रद्धा, प्रेम, आशीर्वाद आदि के भाव उत्पन्न होते हैं, वे सब 'नमः' के अन्दर समाविष्ट हैं। अतः अभिवादन के लिए वैदिक 'नमस्ते' शब्द अत्यन्त हृदय-ग्राही और उपयुक्त है। जब छोटे बड़े को 'नमस्ते' कहने में पारस्परिक सौहार्द और एक-दूसरे की उन्नति की कामना व्यक्त होती है। साथ ही 'नमः' में केवल शुभकामना ही नहीं, प्रत्युत बड़े-छोटे सबके प्रति कर्तव्य-पालन का भाव भी निहित है।

हे राष्ट्र के विद्यावृद्ध और गुणवृद्ध महान् नर-नारियों! हे उपदेशामृत-वर्षा से जनता को तृप्त करनेवाले वीतराग संन्यासियो! हे विद्वच्छिरोमणि तपोनिष्ठ वानप्रस्थ आचार्यो! हे देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने को उद्यत महावीरों! हे जनता-जनार्दन की सेवा में तत्पर महापुरुषों! 'तुम्हें नमः'। हे निश्छल भावभंगियों और बाल-क्रीड़ाओं से मन को मुदित करने वाले अबोध शिशुओं! हे अल्पवयस्क कुमारो! हे गुरु के अधीन विद्याध्ययन में रत तपस्वी, व्रती ब्रह्मचारियों! तुम्हें 'नमः'। हे अपने संकल्प-बल से भूमि आकाश को झुका देनेवाले बली, साहसी, ओजस्वी, विजयी युवको! तुम्हें 'नमः'। हे परिपक्व, धीर, गम्भीर, अनुभवी, धन्य, वन्दनीय, वयोवृद्ध जनो! तुम्हें 'नमः'।

समस्त बालक, युवक, वृद्ध मेरे अर्चनीय देव हैं। जहाँ तक सम्भव होगा, मैं इन्हें स्नेह-सत्कार दूँगा, इनकी सेवा करूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा कि जो मुझसे बड़े हैं, उनकी शंसना में, उनके उपकार के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन में मुझसे कोई त्रुटि न हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

# आनन्द गायत्री कथा

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि "भवः" का अर्थ है 'दुःख विनाशक'। हम ईश्वर को यदि दुःख विनाशक कहते हैं, उससे दुःखों को नाश करने की प्रार्थना करते हैं, तो हमारा भी कर्तव्य है कि व्यर्थ में दुःखों को उत्पन्न न करें। "स्वः" का अर्थ है आनन्द देने वाला, और आनन्द ही वह वस्तु है जिसकी मेरे और आपके पास कमी है। आत्मा सत्-चित् है, आनन्द उसके पास है नहीं, केवल परमात्मा ही सत्, चित् और आनन्द है।

आनन्द की इच्छा है तो ऊपर चढ़ो, नीचे मत गिरो, क्योंकि सुख को आनन्द को देने वाला केवल परमात्मा है। वह 'भू' है-प्राणों का आधार, 'भुवः' है-दुःखों का नाश करने वाला, 'स्वः' है-आनन्द का देनेवाला। यही है गायत्री मन्त्र के तीन शब्दों का अर्थ। इसके साथ एक और शब्द है 'ओ३म्'। ओ३म् एक असीम सागर है, वह अनन्त है, निःसीम है, नेति है। 'ओ३म्' का अभिप्राय है रक्षा करने वाला।

—अब आगे

प्यारी माताओं तथा सज्जनो!

**घूँघट के पट खोल तोहे पिया मिलेंगे।**

सभी लोग चाहते हैं कि घूँघट के पट खुल जाएँ। सभी लोग चाहते हैं कि पिया मिल जाएँ, परन्तु प्रयत्न किए बिना तो ये पट खुलते नहीं। गायत्री वह महामन्त्र है जो पट खोल देता है। गायत्री ही दुःखी मनुष्य को उस प्रेमी के समक्ष ले जाकर खड़ा कर देती है, जो परमानन्द और परम शक्ति है। अब से पूर्व मैंने आपको 'ओ३म् भूः भुवः स्वः' इन चार शब्दों के अर्थ बताए। आज शेष शब्दों के अर्थ बताने से पहले गायत्री की महिमा बताना चाहता हूँ। 'देवी भागवत' का हिन्दुओं में बड़ा मान है। 'देवी भागवत' के बारहवें स्कन्ध के आठवें अध्याय में गायत्री मन्त्र के विषय में जो कुछ लिखा है, वह आपको सुनाता हूँ। 'देवी भागवत के शब्द हैं-"विष्णु की उपासना नित्य और सनातन नहीं। वेद में विष्णु की उपासना का उल्लेख कहीं नहीं आता, इसलिए विष्णु की दीक्षा सनातन नहीं। शिव की उपासना भी नित्य नहीं। नित्य और सनातन यदि है तो केवल गायत्री की ही उपासना। सभी वेदों और शास्त्रों में इसी गायत्री की ही उपासना कही गई है। गायत्री वह महामन्त्र है जिसके बिना ब्राह्मण का पतन हो जाता है। गायत्री की उपासना करने से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को मुक्ति मिलती है। इसी से मोक्ष होता है। मनु महाराज ने कहा कि जो गायत्री की उपासना करता है, उसे और किसी उपासना की आवश्यकता नहीं रहती। इससे आत्मा के कपाट खुल जाते हैं।"

इन शब्दों के आधार पर मैं कहता हूँ कि गायत्री के जाप से, गायत्री की उपासना से घूँघट के पट खुल जाते हैं।

एक बार जब शिव जी महाराज माता पार्वती के साथ कैलाश में घूमते-फिरते थे, तो भगवती पार्वती ने पूछा, "हे देव! आप किस देव की उपासना करते हैं जिससे आपको परम सिद्धि प्राप्त हुई?" महाराज शिव संसार के आदि योगी थे। योग के सब रहस्यों से वे भली-भाँति परिचित थे। उन्होंने जो उत्तर दिया उसे सुनो! शिव महाराज ने कहा-"गायत्री देवी माता है और पृथिवी की सबसे पहली और सबसे बड़ी शक्ति है। वह संसार की माता है। मैं उसी की उपासना करता हूँ। विद्वानों ने योग के सारे साधनों की मूलाधार गायत्री को स्वीकार किया है। गायत्री भूलोक की कामधेनु है। उससे सब-कुछ प्राप्त होता है।"

यह है गायत्री की महिमा। बाद में लोगों ने जिसे भगवान् कहा, योगेश्वर और योगिराज कहा, जो योग-विद्या के सबसे पहले प्रचारक थे, उन्होंने भी कहा-"गायत्री ही पृथिवी की सबसे पहली शक्ति है" और आगे चलकर पार्वती को सम्बोधित करके उन्होंने कहा-"प्रिय विद्वानों ने योग की सभी क्रियाओं के लिए गायत्री ही को आधार माना है। गायत्री से आठों चक्र खुलते हैं-(1) मूलाधार, (2) स्वाधिष्ठान, (3) मणिपूरक, (4) अनाहत, (5) मन, (6) विशुद्धि, (7) आज्ञा-चक्र, (8) ब्रह्मरन्ध्र।"

इन सबके नीचे वह शक्ति सर्पिणी की भाँति कुण्डली मारकर बैठी है जिसे कुण्डलिनी कहते हैं। सर्प जिस प्रकार बैठता है, उसी प्रकार तीन कुण्डली मारकर वह महाशक्ति मूलाधार में सोई हुई है। रीढ़ की हड्डी जहाँ नीचे पहुँचकर अन्त को प्राप्त होती है, वहाँ अपने मुँह से सुषुम्णा को पकड़े बैठी है। उसका मुँह खुल जाए तो योगी के लिए कल्याण का मार्ग खुल जाता

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य

● डॉ महेश विद्यालंकार

महर्षि दयानन्द का स्वप्न, उद्देश्य और प्रयास था–पुनः देश देशान्तरों में सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार तथा स्थापना हो। वैदिक धर्म की जगह नाना पंथों, सम्प्रदायों, गुरुओं, महन्तों आदि ने ले ली थी। वेदज्ञान विस्मृत हो रहा था, सच्चे धर्म को भूलकर लोग सम्प्रदायों में बट रहे थे। चारों ओर घोर अज्ञान अविद्या, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास आदि फैला हुआ था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में ऋषिवर का आगमन हुआ। उनका सम्पूर्ण जीवन विरोधों संघर्षों एवं कठिनाईयों में निकला। अवैदिक, अवैज्ञानिक, मिथ्या बातों को हटाने तथा मिटाने के लिए उन्होंने क्रान्तिकारी विचारधारा की ज्वाला को प्रज्ज्वलित किया, जो आर्य समाज कहलाया। आर्य समाज स्वामी दयानन्द के विचारों सिन्द्धातों आदर्शों एवं अधूरे कार्यों का उत्तराधिकारी है। उन्हीं के उद्देश्यों प्रचार–प्रसार एवं पूर्ति के लिए आर्य समाज, सभाएँ, संगठन संस्थाएं, गुरुकुल, डी.ए.वी. आदि बनाए गए। आर्य समाज की स्थापना के बाद स्वामी जी असमय व अचानक हमसे विदा हो गए। उन्हें कार्य करने का बहुत थोड़ा समय मिला। उसके अनुयायियों, दीवानों, जनूनवाले और पागल कहलाने वाले लोगों ने आर्य समाज को राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक क्षेत्रों में बुलन्दियों पर पहुँचा दिया। ऋषि के बाद की पीढ़ी के तप, त्याग, तपस्या, सेवा, ऋषिभक्ति, और बलिदान का अमर प्रेरक उदाहरण सुनते तथा पढ़ते हैं तो हृदय शत्–शत् नमन करने लगता है। अतीत साक्षी है कि आर्य समाज का प्रत्येक क्षेत्र में ऐतिहासिक, उल्लेखनीय स्मरणीय और वन्दनीय योगदान रहा है।

आर्य समाज कोई पंथ, मजहब व सम्प्रदाय नहीं है। आर्य समाज वैचारिक, क्रान्तिकारी, सुधारवादी, प्रगतिशील, तथा मानवतावादी, विचाराधारा है। यह सुधारवादी वैचारिक आन्दोलन है। इसका मुख्य उद्देश्य–**कृण्वन्तो विश्वमार्य्य** और संसार का उपरात करना है। इसके पास सत्प एवं वेद आधारित व विज्ञान सम्मत वैचारिक सम्पदा है। विचारों को निर्माण, सुधार एवं परिवर्तन की मजबूत कड़ी माना जाता है। वेद ऋषिदयानन्द और आर्यसमाज संसार को सद्विचार देता हैं। विचारों से ही व्यक्ति, परिवार, समाज राष्ट्र तथा विश्व को सन्मार्ग की प्रेरणा व दिशा मिलती है। वेद प्रचार आर्य समाज को वसीयत, विरासत व दायित्व में मिला है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। आर्य समाज के अलावा कोई तो मानता और न ही कहता है। वेद प्रचार आर्य समाज का मुख्य कार्य तथा उद्देश्य है। वेद प्रचार घटने तथा न होने के कारण संसार में ढ़ोग, पाखण्ड, गुरुडम अन्धभक्ति, मूर्तिपूजा, गुरुवाद आदि अवैदिक बातें तेज़ी से बढ़ तथा फैल रही हैं। धर्म, भक्ति, परमात्मा, तीर्थ, मन्दिर आदि सभी बाज़ार एवं व्यापार बनते जा रहे हैं। इन्हीं गलत बातों बुराईयों एवं मिथ्या बातों को रोकने टोकने के लिए आर्य समाज बना था। आर्य समाज गलत बातों का खण्डन और सत्य विचारों का मण्डन करता है। आर्य समाज ने सदा चौकीदार की भूमिका निभाई। जागते रहो, जागते रहो, स्वयं जागो और दूसरों को भी सावधान एवं जागरूक रखखो। आज वेद प्रचार घट रहा है। गौण कार्य स्कूल, औषधालय, बरातघर दुकानें, मैरिज ब्यूरों आदि बढ़ व खुल रहे हैं। इनसे समाज मन्दिरों की सात्विकता, धार्मिकता पवित्रता और भक्ति पूर्ण वातावरण विकृत व दूषित हो रहा है। हमारे दैनिक, साप्ताहिक, उत्सवों, यज्ञों, सत्संग आदि से जो प्रेरक चिन्तन, विचार, सन्देश तथा आर्यसमाज से जुड़ने की वैचारिक चेतना जागृत होनी चाहिए वैसी इन कार्यक्रमों से नहीं ही पा रही है। यह चिन्तनीय पहलू है। हम मूल उद्देश्यों से हटते व कटते जा रहे हैं। युवापीढ़ी हमसे दूर हो रही है। हमारे दैनिक साप्ताहिक यज्ञों कथाओं उत्सवों आदि में संख्या घट रही है। पुराने तेज़ी से जा रहे हैं, नये बन भी नहीं रहे और बनाए भी नहीं जा रहे। किसी को ऋषि–मिशन, वेदप्रचार तथा आर्य समाज की चिन्ता, बैचेनी और पीड़ा बैचेन नहीं कर रही है।

आर्य समाज के अनुयायी, सदस्य, विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक, संन्यासी आदि नही बन रहे हैं। हमारा प्रभाव, पहचान, साख, विश्वसनीयता आदि घट व कम हो रही है। ऋषि ने जिन बातों का विरोध किया था हम वही बातें करने व कराने में लगे हैं। जो समाज में होना चाहिए, वह हो नहीं रहा हैं जो नहीं होना चाहिए वह खूब हो रहा है। वर्तमान में आर्य समाज बाहर से भवन, सम्पत्ति, स्कूल, कॉलेज, संस्थाओं, आश्रमों, संगठनों आदि की दृष्टि से खूब लम्बा, चौड़ा फैला हुआ दिखाई दे रहा है, मगर रचनात्मक निर्माणात्मक, गुणात्मक सत्य धर्म एवं सिद्धान्त आदि की दृष्टि में वे कमज़ोर व खोखलें हो रहे हैं। व्यर्थ के विवादों, मतभेदों, झगड़ों, स्वार्थ, अहंकार आदि के कार्यों में शक्ति सोच, समय धर्म एवं भागदौड़ लग रही है। ऋषि–मिशन, आर्य समाज और वेद प्रचार के लिए एक झण्डे के नीचे होकर कोई काम नहीं करना चाहता है। अपने–अपने, अलग–अलग, संगठन संस्थाएं आश्रम आदि बना लिए हैं। इसमें आर्य समाज का धन और जनबल दोनों बट रहे हैं। मुख्य संगठन कमज़ोर व शिथिल हो रहा है। स्वार्थी पदलोलुप, अधार्मिक तथा सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का आर्य समाज व सभा संगठनों में तेज़ी से प्रवेश हो रहा है जो दयानन्द और आर्य समाज को व्यापार का रूप दे रहे हैं। कुछ गैर आर्यसमाजी संगठनों की आर्यसमाज की सम्पत्तियों तथा स्थानों पर गिद्ध दृष्टि पड़ रही है। ये योजना बद्ध तरीके से कब्जे कर रहे हैं और उनके हो भी गए हैं। यदि आर्य समाज और ऋषि भक्तों ने अधिकार व कब्जों वाली खतरनाक चाल को न समझा और न रोका, तो समाज मन्दिरों व संस्थाओं में दयानन्द की जगह विवेकानन्द के चित्र दिखाई देंगे।

आर्य समाज स्थापना दिवस की तिथि ऐतिहासिक, यादगार व महत्त्वपूर्ण है। यह अवसर हम सब आर्यों को ऋषि तथा आर्य समाज के लिए सोचने समझने करने एवं व्रत–संकल्प लेने की प्रेरणा दे रहा है। सोचो! विचारो! क्या खोया, क्या पाया! कहाँ के लिए चले थे। कहाँ जा रहे हैं। जिन उद्देश्यों तथा आदर्शों के लिए ऋषि आजीवन विषपी रहे थे। वे बातें आदर्श तथा मन्तव्य हमारे जीवनों, समाजों, संगठनों सभाओं में हैं या नहीं? नहीं हैं तो हम गुनाहगार हैं? हम अपने को धोखा दे रहे हैं। हम समाजी तो बन गए, मगर आर्यत्वपूर्ण जीवन दर्शन से दूर हो रहे हैं। हमारे जीवनों में धार्मिकता, आध्यातिमकता, प्रभु भक्ति, सत्संग स्वाध्याय आदि छूट रहे हैं। इसी कारण हम पद प्रतिष्ठा स्वार्थ अहंकार आदि की दौड़ में भाग रहे हैं। यह कटु सत्य है इस समय आर्यसमाज बड़ी विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। इसे संभालने और बचाने की शीघ्र आवश्यकता है। ऋषि ने जो पाप, अधर्म, असत्य बुराईयों को हटाने के लिए जो सत्य ज्ञान तथा वैचारिक क्रांति की ज्वाला जलाई थी। उसे बुझाने के लिए चारों ओर से षड्यन्त्र चल रहे हैं। यह निर्विवाद सत्य है–आर्यसमाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। जीवन–जगत को देने के लिए इसके पास अमूल्य प्रेरक ज्ञान विचारधारा एवं चिन्तन है। आज के भूले–भटके मानव समाज के लिए वैदिक चिन्तन प्रकाशस्तम्भ का कार्य कर सकता है। व्यावहारिक रूप से यह कथन सच है जहाँ–जहाँ आर्य समाज है वहाँ–वहाँ जीवन है। आज ज्वलन्त प्रश्न हम सबके सामने है–ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के विचारों, सिद्धान्तों व आदर्शों को कैसे प्रचारित, प्रसारित और जन–जन तक पहुँचाया जाए। विचारों, सिद्धान्तों, एकता, संगठन और प्रचार–प्रसार से व्यक्ति, संस्थाएं व संगठन जीवित–जागृत तथा अमर रहते हैं। इस समय हम सबका कर्त्तव्य है व्यर्थ के झगड़े, विवाद, स्वार्थ, अहंकार आदि को छोड़कर ऋषि मिशन तथा आर्य समाज की रक्षा उन्नति–प्रगति के लिए त्याग व सेवाभाव से सोचें। यही आर्य समाज स्थापना दिवस का सन्देश है।

**बी.जे. 129 पूर्वी शालीमार बाग**
**दिल्ली–110088**

www.thearyasamaj.org



# अर्थ–शुचिता सर्वोपरि है!

● महात्मा चैतन्यमुनि

आज हमारे समाज में धन का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है क्योंकि आज मान–सम्मान की कसौटी भी केवल और केवल मात्र धन ही हो गया है। यदि आपके पास धन है तो आप जो चाहें कर सकते हैं। भले ही बड़े से बड़ा पाप कर लें मगर धन का प्रयोग करके आप कानून की नजरों से भी बच सकते हैं। धन है तो आप बड़े से बड़े पद को हासिल कर सकते हैं। यहाँ तक कि किसी की हत्या करके भी आप बच सकते हैं। हमारे मनीषियों ने धन के इस महत्त्व को कम करने के लिए आश्रम और वर्ण–व्यवस्था का विधान किया था। इस व्यवस्था के अन्दर धन को इतना अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था। चार आश्रमों में से ब्रह्मचर्य आश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यास आश्रम के व्यक्ति धन नहीं कमाते थे। केवल गृहस्थ को ही धन कमाने का अधिकार था, शेष सभी आश्रमों की व्यवस्था का दायित्व गृहस्थ पर ही होता था मगर सभी गृहस्थी भी धन नहीं कमाते थे। चार वर्णों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र को धन कमाने की चिन्ता नहीं होती थी क्योंकि यह कार्य केवल वैश्य का हुआ करता था। वैश्य द्वारा धन कमाने की भी कुछ मर्यादाएँ थीं। भले ही धन कमाना गृहस्थ का दायित्व था मगर सम्मान ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी का अधिक होता था। उसी प्रकार वैश्य से अधिक प्रतिष्ठा और सम्मान ब्राह्मण का होता था। कालान्तर में यह व्यवस्थाएँ समाप्त हो गईं तथा प्रत्येक व्यक्ति ही धन कमाने के लिए दीवाना हो गया। इसलिए धन का महत्त्व बढ़ गया। आज ब्राह्मण की नहीं बल्कि धनवान की पूजा होती है। आज संन्यासी की नहीं बल्कि धनवान् की पूजा होती है।

धन का महत्त्व इतना अधिक बढ़ गया है कि आज लोग रातों रात अमीर बनना चाहते हैं..... साधन चाहे कैसा भी क्यों न हो मगर उन्हें तो बस धन कमाना है। धन कमाने के लिए दूध वाला दूध में पानी मिलाने में पीछे नहीं है, व्यापारी अनाज आदि में मिलावट करने में पीछे नहीं हैं। बाबू घूस लेने में पीछे नहीं है। पुलिस, डाक्टर, वकील, न्यायाधीश, नेता, अभिनेता सभी बड़े–बड़े घोटालों में संलिप्त हैं। लोग घोटाले करते हैं और फिर धन के बल पर उनसे बरी भी हो जाते हैं। लोग चार पैसे कमाने के लिए नकली दवाईयों तक का धन्धा करते हैं। उनकी दवाईयों से कितने लोगों की मृत्यु होती है, इसकी उन्हें चिन्ता नहीं है–उन्हें तो बस धन कमाना है। धन प्राप्ति की इस दौड़ में आज सभी निमग्न हैं। यहाँ तक कि आज बहुत से तथाकथित सन्त भी रात–दिन चेले–चेलियाँ बनाकर धन कमाने में ही लगे हुए हैं। इसीलिए समूची सामाजिक व्यवस्था चरमरा गई है। आज लड़के–लड़की का रिश्ता भी उनके गुण, कर्म तथा स्वभाव के आधार पर नहीं होता है बल्कि वहाँ पर भी सौदा किया जाता है कि कितना धन दोगे..... फिर भी तृप्ति नहीं है क्योंकि बाद में कितनी ही नारियों को जिन्दा जला दिया जाता है। धन की इस दौड़ ने सबको पागल बना रखा है। हमारे देश की यह परम्परा नहीं थी तथा पैसे की यह दौड़ भी इतनी अधिक नहीं थी। चीनी यात्री मैगस्थनीज भारत की यात्रा पर आया तो उसने लिखा कि चन्द्रगुप्त के समय में लोग अपने घरों में ताले नहीं लगाते थे। किसी ने बहुत सुन्दर कहा है–

**अन्यदीये तृणे रत्ने कांचने मौक्तिकेऽपि वा।**
**मनसा विनिवृत्तिर्या तदस्तेयं विदुर्बुधाः।।**

पराए तृण,रत्न,स्वर्ण और मोती आदि को ग्रहण करने की मन से भी जो वृत्ति होती है वह भी अस्तेय है, ऐसा ज्ञानी लोग कहते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि मन से भी किसी पराई वस्तु को चुराने का विचार तक भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि उस कुवृत्ति का संस्कार व्यक्ति के सूक्ष्म शरीर पर पड़ जाता है। यह संस्कार ही व्यक्ति को बार–बार चोरी आदि करने की प्रेरणा देते हैं। चोरी प्रकट तथा अप्रकट दो प्रकार की होती है इस सम्बन्ध में कहा गया है–

**परद्रव्यापहारोऽत्र प्रोक्तो द्विविध एव वै।**
**प्रकाशश्चाऽप्रकाशश्च, स ज्ञेयः सूक्ष्मया धिया।।**
**प्रकाशवंचनन्तत्र नानापण्योपजीविभिः।**
**प्रच्छन्नवंचनं तद्यत् स्तेनोऽऽटविकादिभिः।।**

पराए पदार्थ का हरण दो प्रकार का बताया गया है। एक प्रकट और दूसरा अप्रकट। इस बात को सूक्ष्म बुद्धि से समझना चाहिए। प्रकट रुप से पराए पदार्थ का हरण वह है जो अनेक प्रकार के व्यापारी तथा व्यवसायी आदि द्वारा तोल–माप की गड़बड़ी या मिलावट आदि के द्वारा किया जाता है। अप्रकट रुप वह है जो रात के अँधेरे आदि में किसी चोर द्वारा किया जाता है। ये दोनों प्रकार के ही स्तेय त्याज्य हैं। विशेषरुप से इस प्रकार से चोरी आदि करने वाले व्यक्ति की आत्मिक उन्नति तो संभव है ही नहीं। इस सम्बन्ध में तो यहाँ तक कहा गया है कि अपने पदार्थों के प्रति भी मोह–ममता आदि नहीं होनी चाहिए–

**आत्मन्यनात्मभावेन, व्यवहारविवर्जितम्।**
**यत्तदस्तेयमित्ययुक्तमात्मविद्भिर्महामते।।**

हे महामते ! अपनी वस्तुओं में भी ममता–त्याग के भाव से जो स्वार्थ परायणता की वृत्ति का त्यागना है उसे ही आत्मज्ञानी लोग अस्तेय कहते हैं। इसीलिए वेद हमें आदेश देता है–**तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।** (यजु. 40–1) अर्थात् हम अपनी वस्तुओं का प्रयोग भी त्यागमयी भावना से ही करें। इस प्रकार की निष्काम भावना से ही हम संसार के बन्धन से मुक्त रह सकते हैं। हम इस भावना को परिपक्व बनाएँ कि जो कुछ भी हमारा है वह अन्ततः उस परमपिता परमात्मा का ही है, हमें तो मात्र प्रयोग करने के लिए ही मिला हुआ है। समस्त सम्पदा का असली मालिक तो परमात्मा ही हैं। मगर अपनी अपनी मलकियत सिद्ध करने के लिए दो देशों में घमासान युद्ध हो जाते हैं और लाखों नागरिकों तथा हजारों सैनिकों को इसका शिकार होना पड़ता है। अपनी–अपनी मलकीयत सिद्ध करने के लिए प्रान्तों में झगड़े हो जाते हैं जिसके कारण नागरिकों को परेशान होना पड़ता है। इसी प्रकार परिवारों में जमीन जायदाद के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी शत्रुता चली रहती है। भाई–भाई के खून का प्यासा हो जाता है। पड़ोसी–पड़ोसी का शत्रु बन जाता है। आदमी नाहक ही इसे अपनी–अपनी कहकर लड़ता झगड़ता रहता है। जब सही अर्थों में हम सभी कुछ उसी का समझेंगे तो सारे संसार में भाईचारे की भावना पनप सकती है। हमारे मनीषियों ने इस संसार को एक धर्मशाला की संज्ञा दी है। इससे पूर्व भी इस सम्पदा को अपनी कहने वाले कितने ही मालिक हो चुके हैं मगर वे इसका जरा सा हिस्सा भी क्या अपने साथ ले गए? जब वे नहीं ले जा सके तो क्या हम कुछ ले जा सकेंगे? बड़े ही गहन चिन्तन की जरुरत है..... हम से पूर्व कितनी ही पीढ़ियाँ हो चुकी हैं। हम तो ठीक–ठीक गणना भी नही कर सकते हैं। उन्होंने विवाह रचाए, कोठियाँ बनाई, जमीनें खरीदीं मगर सभी कुछ यहीं का यहीं, धरा का धराया ही रह गया। वे कुछ वर्ष इसका उपभोग करके चले गए। हमने भी कुछ दिन इसका भोग करके चले जाना है। तो फिर यह संसार एक सराय नहीं तो और क्या है? दु:खी वही है जो इसे अपनी समझकर हमेशा चिपके रहने की लालसा करता है। इसलिए हमें यह सब परमात्मा का समझकर ही भोग करना अपेक्षित है। कुछ लोगों ने इस सम्पदा को अपनी समझकर ऐसे भोगा कि वे इसके साथ चिपक कर रह गए और कुछ ऐसे भी हुए जिन्होंने इस सम्पदा का सही–सही प्रयोग ही नहीं किया। वैदिक दर्शन भोगने की बात तो करता है मगर साथ ही त्याग भाव बनाए रखने का परामर्श भी देता है। वैदिक संस्कृति में यह धन–दौलत आदि हमारे मार्ग में शत्रु नहीं है, बल्कि ये मिले ही भोगने के लिए हैं। यह भी नहीं कहा गया है कि हम धन सम्पदा न जोड़ें..... परिश्रम न करें... निठल्ले बैठे रहें। बल्कि कहा गया है कि हम खूब धन और ऐश्वर्य के स्वामी बनें। हाँ हम अन्ततः प्रत्येक वस्तु का स्वामित्व उस परमात्मा का ही मानें.......

इस मानव जीवन को देव दुर्लभ कहा गया है तो केवल इसलिए नहीं कि इसमें आकर हमें खूब तरह–तरह के भोग भोगने के लिए मिलते हैं बल्कि इसे इसलिए महान् कहा गया है क्योंकि इसमें आकर ही हम परमार्थ की कमाई कर सकते हैं। इस मानव योनि में ही हम वह सम्पदा एकत्रित कर सकते हैं जो हमारा उद्धार कर सकती है। ऐसा पुण्य हम तभी कर सकते हैं जब हम अस्तेय की भावना को प्रश्रय दें और अपने पदार्थों को भी त्यागमयी भावना से ही भोगें। मगर इस संसार रुपी मेले में हम इतना खो जाते हैं कि अविवेकी होकर पुण्य के स्थान पर पाप ही कमाते चले जाते है। यह संसार रुपी मेला है भी बड़ा आकर्षक, कदम–कदम पर नए से नए प्रलोभन हमें गिराने के लिए उपस्थित हैं। कहाँ तो हमें इस सम्पदा का प्रयोग लोक–परलोक सँवारने के लिए करना था और कहाँ हम इसी में खो कर रह जाते हैं। बल्कि दूसरों की सम्पदा को भी सदा अपनी बनाने की ताक में रहते हैं। यही हमारे बन्धन का कारण है। सांसारिक विषयों में एक बार व्यक्ति गिरता है तो फिर गिरता ही चला जाता है। जितना ही वह उन विषयों को भोगता चला जाता है उतना ही उन्हें भोगने की इच्छा और भी अधिक प्रबल होती जाती है। इसलिए कहा गया है कि पराई वस्तु को प्राप्त करने के संस्कार ही पैदा नहीं होने देने चाहिए। यदि एक बार भी जरा सी छूट दे दी तो उस गहरे गढ्ढे से निकलना कठिन से कठिनतम होता चला जाएगा। इसलिए जितना शीघ्र हो दूसरे के धन को हड़पने के विचार को तुरन्त त्याग देना चाहिए। इस प्रकार के व्यक्ति को ही पण्डित कहा गया है–

**मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्।**
**आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति स पण्डितः।।**

जो मनुष्य पराई स्त्रियों में अपनी माता के समान, पराए धन में मिट्टी के ढेले के समान और सब प्राणियों में अपने समान भावना रखता है वही वास्तव मे पण्डित है। मनु महाराज ने धन की पवित्रता को प्रमुख कहा है–

**सर्वेषामेव शौचनामर्थशौचं परं स्मृतम्।**
**योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः।।** (मनु.5–106)

**नेहेतसथान् प्रसगेन न विरुद्धेन कर्मणा।**
**न विद्यमानेष्वर्थेषु नार्त्यामपि यतस्ततः।।** (मनु. 4–15)

**अधार्मिको नरो यो हि यस्य चाप्यनृतं धनम्।**
**हिंसारतश्च यो नित्यं नेहासौ सुखमेधते।।** (मनु. 4–170)

सभी प्रकार की शुद्धियों में धन सम्बन्धी

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# सच्चे-राम को ईश्वर बताने की झूठी बैसाखी क्यों?

● पं. आर्य प्रहलाद गिरि

सीधे-सच्चे हिंदुओं को इसाई बनाने के लिए कमर कस कर भारत में आए फादर कामिल बुल्के भी अप्रक्षिप्त वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राजा राम चंद्र, सती सीता, महावीर हनुमान, भाई भरतादि के त्यागपूर्ण जीवन-चरित्रों को पढ़ते हैं, तो वेदकालीन प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का ऐसा उत्कृष्ट-सुंदरतम-स्वर्णिम सुखद दृश्य देखते ही चिल्ला उठते हैं।

जिस तरह सैकड़ों शेक्सपियर भी राम चरित मानस सा विश्व का सुंदरतम महाकाव्य नही रच सकते, उसी तरह राम-सा दिव्य महामानव (देवात्मा, देवदूत, बोधिसत्व-तथागत, तीर्थंकर, पैगंबर, प्रभुपुत्र, फारिस्ता) को भी कोई हमें इतिहास के किसी पन्ने पर नहीं दिखला सकता। ऐसा इसलिए भी कि-

**''राम, तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है ! कोई कवि बन जाए, सहज संभाव्य है !!''**

**-राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जी**

समुद्र को भी बांध देने वाले युगपुरुष हमारे राम मानवधर्म के उच्चादर्शों पर इसलिए भी चलते रहे कि इनके ही पूर्वज राजर्षि मनु दुनियाँ वालों के सामने सगर्व घोषणा कर चुके थे-

**एतत् देश प्रसूतस्य सकाशात् अग्र जन्मनः।**

**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।।** (2.20)

धरती माता के सारे द्वीप-द्वीपांतरों पर बसने वाले हर तरह के लोग इसी आर्यावर्त देश के अगुओं (नेताओं, प्रतिनिधियों) से अपने-अपने अनुकूल उन्नत चारित्रिक सभ्यता-संस्कृति को सीखते रहें।

किंतु आज दुनियाँ को छोड़े, हिंदू कहलाने वाले हम आर्यवंशी लोग भी अपने पूर्वज राम को ईश्वर (अन अनुकरणीय, सिर्फ चर्चा करने योग्य) कहकर इनके विचारों-व्यवहारों से कुछ भी नहीं सीखते। राम का नाम ले-लेकर बेधड़क रावण-पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। गले ही नहीं, मंदिरों में भी राम के चित्र सजाकर रावण की ही चरित्रोपासना में जुटे हुए हैं। अतः राम विमुखों की जो दशा होनी चाहिए, वही दुर्दशा महाभारत युद्ध के बाद से आज तक हमारी होती जा रही है।

हल्दीघाटी में घास की रोटी भी खाकर जब मुगलों के प्रहारों को तपस्वी महाराणा प्रताप अपने तलवारों से माँ भारत-भारती की रक्षा कर रहे थे, उसी समय उसी काम को सारी मुसीबतों को सहते हुए बड़ी बहादुरी, बुद्धिमानी और कुशलता से संत कवि गोस्वामी तुलसीदास भी अपनी सफल लेखनी से, काशी से भाग कर अयोध्या में कर रहे थे। काल्पनिक ही सही, यदि श्रीमद् भागवत गीता को मौर्य-गुप्तकाल में न लिखा जाता तो सारे हिंदू बौद्ध बन गए होते और बामियान के विशाल बुद्धमूर्ति की तरह सारे बौद्धों को मिटा देना अरबी-आक्रांताओं के लिए अत्यंत सरल था। इसी तरह स्वराष्ट्र-धर्मरक्षक महात्मा तुलसीदास भी सरल और रोचक भाषा शैली में शैव-वैष्णव का कलह मिटाते हुए राम चरित मानस को लिख कर अयोध्या के ही राजा राम को पूर्ण ब्रह्म परमात्मा बताने और सिर्फ हरिभजन को ही असली यज्ञ-पूजा बताने में यदि सफल न हो पाते, तो उस समय हमें मुहम्मदी, नमाजी और कुरानी बन जाना ही पड़ता।

जिस तरह हम राष्ट्र-धर्म रक्षक चाणक्य, शंकराचार्य, गुरु गोविंद सिंह, शिवाजी, दयानंद, विवेकानंद, सुभाष, सावरकर, पटेलादि के उपकारों को नहीं भूलते, त्यों ही गीतासार और मानसकार को भी भारतीय वैदिक संस्कृति की रक्षा हेतु 'भारत रत्न' पुरस्कार जैसा कुछ न कुछ अविस्मरणीय -सम्मान तो मिलना ही चाहिए। भले ही इनके बनाये ये साहित्यिक-हथियार आज कुछ मोर्चे पर अनुपयुक्त, अप्रासंगिक हो गये हों, तथापि सेवानिवृतों (रिटायर्डों) की भांति ये सादर पेंशन पाने के अधिकारी तो हैं ही।

अभी के लिए 'सत्यार्थ-प्रकाश' अत्यंत अमोघ-औषधीय व बुद्धिवर्धक टॉनिक है। जो वाल्मीकी रामायण और महाभारत की तरह ही श्रीराम और श्रीकृष्ण को एक आदर्श महात्मा ही साबित करता है, परमात्मा नहीं!

पचास साल पहले तक अक्सर लोग कृतज्ञ-भावुकतावश डॉक्टरों को दूसरा भगवान कह बैठते थे। आज भी हम त्यागियों-परोपकारियों-सहायकों को देवदूत-फरिस्ता-भगवान कह देते हैं। इसी तरह हम अग्नि, आदित्य, वायु, अंगिरा, इंद्र, ब्रह्मा, विष्णु शंकर, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, मनु, भगीरथ, परशुराम, राम, कृष्ण, व्यास, गोतम, कणाद, कपिल, पतंजलि आदि वैज्ञानिकों-ऋषियों को (देव-देवी) तो कह सकते हैं, किंतु परमात्मा कदापि नहीं। क्योंकि वेदानुसार परमात्मा न तो जन्मता-मरता है और न किसी आकार में कभी बंधता है। तथा उसी निराकार एक अखंड अनंत ब्रह्मा-ओ३म् के एक अंश से प्रकाश पा-पाकर अनेकों ब्रह्मा विष्णु लक्ष्मी शंकरादि जन्मते-मिटते रहते हैं। (मानस-1.141.3) यही ज्ञान-प्रकाशपूर्ण सच्चिदानंद ईश्वर ध्यान, योग, प्रार्थना, प्राणायाम, हवन, परोपकार, सच्चाई, ज्ञान, ईमानदारी सदाचार आदि द्वारा ही सभी मनुष्यों का परमोपास्य है। राम, कृष्ण बुद्ध, महावीर, ईशा, मूसा, मुहम्मद, नानक, कबीर, दयानंदादि भी इसी ईश्वर के उपासक रहे हैं। इन महान ऐतिहासिक ईश्वर भक्तों को ही ईश्वर मान लेना और इनकी मूर्ति को सजीव समझकर लड्डू-पेड़ादि खिलाने-पिलाने, सुलाने-जगाने का अभिनय करना-करवाना भारी मूर्खता या धूर्तता है। यह सिर्फ नास्तिकता ही नहीं, महापुरुषों का अपमान भी है।

राम और कृष्ण का मंदिर बनाकर इनको खिलाने-पहनाने हेतु भीख चंदा मागना, इन्हीं के सामने यजमानों से झूठ बोलना, तंग करना साबित करता है कि ये निडर पंडे लोग भी इन मूर्तियों को चेतन नहीं समझते। राम के प्राण प्रिय, वीर, वेदज्ञ, ब्रह्मचारी, शाकाहारी हनुमान जी को बंदरमुखी बना देने से भी इन पंडों को संतोष न हुआ तो अब से बाघ, गीद्ध, गदहा, सूअर के मुख लगा कर पंचमुखी-हनुमान को पूजवाने के दुस्साहस में लग गए हैं।

हमारे धार्मिक महापुरुषों के पुस्तैनी दलाल बन चुके ये पंडे लोग भली भांती जानते हैं कि जो भगवान मीर कासिम से लेर महमूद गजनी, मुहम्मद गौरी, सिंकदर लोदी, तैमूरलंग, औरंगजेब, कालापहाड़ को कुछ भी बिगाड़ न सका, वो मुझे क्या दंड देगा। सचमुच, मंदिरों के सारे भगवान इन पंडे-पुजारियों के सारे तमाशों के मौन समर्थक ही बने रहते हैं।

हमारे प्रबुद्ध पाठकों! यदि आप विश्व मानवता, के प्रेरणा पुरुष श्रीराम को कृतज्ञतावश प्रणाम करने भर का रस्म निभाना चाहें तब तो ये मंदिर स्मारक ठीक हैं। किंतु यदि आप सफल सामाजिक जिंदगी जीने हेतु श्रीराम का सही संपूर्ण दर्शन करना चाहते हों, तो आप को ध्यान से वाल्मीकि रामायण ही पढ़ना होगा। इस रामायण में कहीं नही लिखा है कि राम ईश्वर हैं, बल्कि राम जी भी 'ओ३म्' और गायत्री मंत्र (**ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव, यद् भद्रं तन्न आसुव**) का जपोपासना, ध्यान, योग, प्राणायाम करने वाले सत्यवादी आर्यपुत्र ही थे। देवी कौशल्या के गर्भ से जन्म और एक सौ ग्यारह वर्ष बाद सरयू में डूबने (जल समाधि) से मृत्यु हुई थी। चूँकि आर्यों में किसी व्यक्ति कृत्ति-कीर्ति को (जन्मदिन पर भी) ही याद रखी जाती थी। उसकी चित्र-मूर्ति या मृत्यु-तिथि (पुण्यतिथी) नहीं मनायी जाती थी, इसीलिए राम की भी न कोई चित्रमूर्ति नहीं, न पुण्यतिथि का उल्लेख। सीता-हरण से काफी दुखी होकर राम खुद ही लक्ष्मण से कहते हैं-'भाई, पूर्व जन्म में जरूर मुझसे कोई भारी अपकर्म हुआ होगा, जो इस जन्म में पिता की मृत्यु, भाई भरत का बिछोह और सीताहरण जैसी मार्मिक-पीड़ाएँ झेलनी पड़ रही हैं। (3.36.4)

वस्तुतः एक चक्रवर्ती राजापुत्र होकर भी श्री सीता-राम का आर्योत्तम जीवन आदि से अंत तक आदर्शों का रिकार्ड बनाने के ही दुखों में बीतता चला गया-

**'धर्म पे चल के दिखलाने में ही**
**अपना सुख माना।**
**निज का सुख तजने के सिवा जो**
**और स्वाद क्या जाना।।**

बुद्ध और मुगलकालीन धर्म संकटों से जन सामान्य को स्वधर्म में बांधे रखने हेतु ही राम की ईश्वरीय-चमत्कारिक कथाएँ गढ़ी गयी थी, ताकि बुद्ध और मुहम्मद से भी राम और कृष्ण ही सर्वाधिक श्रेष्ठ-प्रभावी सबको लगें। किंतु आज के कंप्यूटर युग में वे सब मुझे तो अपने राम के उज्ज्वल चरित्र पर झूठ का गंदा चोंगा पहनाए रखने वाले अपने धूर्त धर्माचार्यों पुरोहितों पर क्रोध तथा अपने धर्मांध-अंधभक्त यजमानों की मूर्खता पर ग्लानि हो रही है। गंगा की तरह गंदे हो गए रामायण के चरित्रों की भी सफाई अब कब होगी? श्रीराम की चारित्रिक मूर्ति निर्मल होते ही रामजन्म भूमि पर ही नहीं, बाबर की भी जन्मभूमि पर भव्य रामालय बन जाएगा।

ईश्वर भक्त राम को ही ईश्वर मान लेना-राष्ट्रसपूत गांधी को राष्ट्रपिता कहने जैसा ही पाप है। ''अब न कहेगा जग कि कर्ण को ईश्वरीय भी बल था। जीता इसीलिए कि उसके पास कवच कुंडल था।'' -(रश्मिरथी दिनकर)

इंद्र को अपना चमत्कारी कवच कुंडल दे देने के बाद जब कर्ण गर्व से ऐसा बोल सकता है, तब हमारे श्रेष्ठतम राम क्यों नहीं कह सकते-

**ईश्वर कह-कह के रे पंडों ! मुझे मंदिर में न बंद करो!**

**ले-ले मेरा नाम वंशजों! रावण-सा ना काम करो!!**

'युगों-युगों तक प्रेरणा देते रहने हेतु ही जीने वाला यदि मैं सचमुच सच्चा राम रहा हूँ, तो मुझे ईश्वर कहलाने की झूठी बैसाखी लेकर पूजित होने की जरूरत नहीं है। मैं सदा मनुष्य ही रहा, मुझे नहीं चाहिए पापी-पांखडियों सा ईश्वर होने का अवैध मुखौटा!'

**निंगा, आसनसोल (पं.बं.)**
**मोबाइल नं. 9735132360**

www.thearyasamaj.org



# यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम कर्म है

## यज्ञ क्या है, करने से लाभ और न करने से हानियाँ

● मनमोहन कुमार आर्य

यज्ञ को वैदिक साहित्य में श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। यज्ञ में ऐसी क्या बात है कि इसे सभी कर्मो से श्रेष्ठ कहा गया है। विचार करने पर ज्ञात होता है कि हम जो कर्म करते हैं वह अपने व्यक्तिगत जीवन को श्रेष्ठ व सुखदायक बनाने के लिए करते हैं। हमने विद्यार्जन अपने लिए किया, शिक्षा–अध्यापन, कृषि, व्यापार व क्षत्रिय कर्मो यथा सेना व पुलिस आदि से जुड़ा रोजगार किया वह भी अपने या अपने परिवार के लिए करते हैं, निवास बनाते हैं अपने व अपने परिवार के लिए, वाहन खरीदते हैं अपने लिए, अच्छा स्वादिष्ट भोजन बनाते हैं वह भी अपने लिए, इससे समाज व देश को अधिक लाभ नहीं होता। इन सभी कार्यो में कहीं परोपकार की भावना नहीं होती। यदि हम अपने यह सभी कार्य अपने साथ दूसरों को भी लाभ पहुँचाने की दृष्टि करें तो उनका महत्त्व केवल अपने लिए किए जाने वाले कार्यों से अधिक होता है। हम जो भी कार्य करते हैं उससे दूसरे जरूरतमन्दों का जितना अधिक से अधिक हित हो, उतना ही वह कार्य अच्छा व श्रेष्ठ होता है। अब विचार करते हैं कि हमारे लिए सबसे अधिक आवश्यक वस्तुत क्या है? विचार करने पर ज्ञात होता है कि जल व वायु हमारे लिए सर्वाधिक आवश्यक वस्तुएँ हैं। भीषण गर्मी की कल्पना कीजिए। यदि आप प्यासे हैं और पानी न मिले तो प्राणों के बाहर जाने की सी स्थिति आ जाती है। इस लिए जल का महत्त्व बहुत अधिक है। अब वायु पर विचार करते हैं। वायु हमारे श्वास–प्रश्वास के लिए आवश्यक है। हम सोते–जागते, सर्दी–गर्मी सभी अवसरों 24 घंटे 365 दिन प्राणों के लिए वायु को लेते और छोड़ते हैं। यदि यह शुद्ध अवस्था में न मिले तो हमारा स्वास्थ्य बिगड़ कर हम रोग ग्रस्त हो जाते हैं। यदि हमारे फेंफड़ों में रक्तशोधन के लिए वायुमण्डल में आवश्यक शुद्ध वायु न हो तो कल्पना कर सकते हैं कि क्या हम 5 मिनट भी जीवित रह सकेंगे? इसका उत्तर है कि नहीं रह सकेंगे। अतः यह सिद्ध हुआ कि जीवन में और संसार में हमारे लिए सबसे अधिक आवश्यक वस्तु प्राणवायु है। संसार में किसी भी मनुष्य व श्वास लेने वाले प्राणी के लिए शुद्ध वायु से बढ़कर कुछ भी नहीं है। अतः यह वायु प्रचुर मात्रा में शुद्ध रूप में मिले, यह हम सभी का प्रयास होना चाहिए तथा यह हमारा प्रमुख कर्तव्य व दायित्व है। अब देखना यह है कि हम वायु को शुद्ध उपलब्ध कराने के लिए करते क्या हैं? हम श्वास लेते हैं तो इस प्रकिया में हम अपनी नासिका से ऑक्सीजन लेते हैं और इसे दूषित कर कार्बन डाई ऑक्साइड गैस बनाकर वायु में छोड़ते हैं जिससे वायु प्रदुषित होती है। श्वास से जो वायु बाहर आती है वह वायु पुनः श्वास लेने के लिए अनुपयोगी व हानिकारक होती है। हमारा श्वास लेने का कार्य ऐसा है कि इससे हमने अपना स्वार्थ तो सिद्ध किया परन्तु इससे जो कार्बन डाइ ऑक्साईड गैस बनी वह हमारे व अन्य सभी प्राणियों के लिए हानिकारक है। इस प्रकार से श्वास लेने व छोड़ने में भी पाप हो रहा है। यह इस कारण से कि हम बिना मूल्य चुकाए प्रकृति से शुद्ध वायु लेते हैं, अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं और उसे विषाक्त करके वायुमण्डल में छोड़ते हैं जो सभी के लिए हानिकारक होती है। अतः मनुष्य अर्थात् मननशील प्राणी होकर अपने सभी छोटे व बड़े काम करने वाला होने से हमारे कारण विषाक्त हुई प्राणवायु को शुद्ध करने का दायित्व व कर्तव्य भी केवल हमारा है। क्या हम इसे पूरा कर रहे हैं? उत्तर है कि नहीं करते है।

अतः भौतिक यज्ञ जिसे अग्निहोत्र भी कहते हैं, वह कार्य है जिससे वायुमण्डल को शुद्ध, पवित्र तथा आरोग्यदायक बनाया जाता है। योगेश्वर श्री कृष्ण जी ने गीता में कहा है कि यज्ञ करने से बादल बनते हैं, बादलों से वर्षा होती है, वर्षा से कृषि का कार्य होकर अन्न उत्पन्न होता है, अन्न मनुष्यों में शक्ति व प्रजनन के लिए आवश्यक धातुओं एवं सामर्थ्य का निर्माण करता है, इससे जीवात्माएँ अपने कर्मानुसार सुख व दुःख भोगने के लिए ईश्वर की व्यवस्थानुसार माता–पिता से जन्म लेती हैं। अतः यज्ञ का करना न केवल श्वास लेने व दूसरों को शुद्ध वायु प्रदान करने के लिए आवश्यक है अपितु संसार चक्र को अच्छी सन्तानें देकर जारी रखने में भी सहायक व आवश्यक है। इससे सिद्ध होता है कि यज्ञ सभी मनुष्य का कर्तव्य है जिसे अन्य कर्तव्यों सहित प्रमुख कर्तव्य या एक 'अनिवार्य धर्म' भी कह सकते हैं। यह ऐसा धर्म है जो कि जाति, मत, मजहब, देश व काल से ऊपर सृष्टि एवं प्राणीमात्र का उपकारी एवं हितकारी है। यज्ञ करना इसलिए भी आवश्यक है कि जिससे हमारे घर के अन्दर का श्वास–प्रश्वास व रसोई के कार्यो से प्रदूषित वायु अग्नि की गर्मी से हल्का होकर खिड़की व रोशनदानों से बाहर निकल जाए तथा बाहर की शुद्ध वायु निवास गृह में भर जाए। यज्ञ करने से यह किया स्वतः सम्पन्न होती है जिससे यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रकिया सिद्ध होती है।

यज्ञ से क्या कोई लाभ भी होता है या नहीं? यह विचारणीय प्रश्न है। यदि कुछ लाभ होता है तभी कोई यज्ञ में प्रवृत्त होगा अन्यथा इसे करना व्यर्थ ही कहा जाएगा। यज्ञ में अग्नि, गोघृत, वनौषधियाँ, अन्न, शुष्क फल व मेवे आदि, शक्कर, अन्य सुगन्धित केसर व कस्तूरी आदि पदार्थो का मुख्यतः प्रयोग किया जाता है। अग्नि में मन्त्रों सहित अल्प मात्रा में आहुति डालने से यह सभी आहूत द्रव्य जलकर अति सूक्ष्म वा प्रायः परमाणुरूप हो जाते हैं और वायु में सर्वत्र फैल जाते हैं। आहूत द्रव्यों के जलकर सूक्ष्म होने व वायु में फैलने का कार्य तो प्रत्यक्ष है, इसमें किसी शंका को कोई अवकाश नहीं है। अब देखना यह है कि वायु में फैलने से इसका वायु पर, सृष्टि पर और सभी प्राणियों पर क्या प्रभाव होता है? मिर्च का उदाहरण हमारे सामने हैं। एक मनुष्य भोजन में कई मिर्च खा सकता है परन्तु यदि मनुष्यों से भरे किसी हॉल में तीव्र अग्नि में एक मिर्च डाल दी जाए तो वहां मिर्च की धाँस से लोगों का बैठना दूभर हो जाता है। लोगों को बेचैनी होती है और लोग स्थान छोड़ कर जाने लगते हैं। ऐसा क्यों होता है, इस कारण कि अग्नि मिर्च को जलाकर सूक्ष्म कर देती है और वह वायु के साथ सभी दिशाओं में फैल जाती है। मिर्च को खाने से जो प्रभाव होता था उसी मिर्च के अग्नि में जलने पर उसका प्रभाव सैकडों वा हजारों गुणा अधिक होता है। यही बात अग्निहोत्र में आहूत किए गए सभी द्रव्यों पर भी लागू होती है। गोघृत, ओषधियों व वनस्पतियों, शक्कर व शुष्क फलों, मेवों आदि का जो प्रभाव उनको मुँह से खाकर प्रयोग करने से होता था वह अब अग्निहोत्र–यज्ञ के द्वारा अग्नि में जलने पर हजारों–लाखों गुणा अधिक हो जाता है और उससे होने वाले लाभ भी उसी अनुपात में मनुष्यों को प्राप्त होते हैं। यज्ञ से निर्मित वायुमण्डल का सीधा प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ता है और इससे साध्य व असाध्य शारीरिक रोगों सहित अनेक मनोरोग भी ठीक हो जाते हैं। यज्ञ करने से केवल यज्ञ करने वाले को ही लाभ नहीं होता अपितु यज्ञ के चहुँ ओर का वायु सारे वायुमण्डल में विस्तीर्ण होने से असंख्य लोगों को इसका लाभ मिलता है जो कि अन्य किसी किया द्वारा सम्भव नहीं है। इस प्रकार से यज्ञ एक छोटा सा अनुष्ठान व कार्य है जिससे अगणित लोगों को शुद्ध प्राणवायु मिलने के साथ प्रत्यक्ष स्वास्थ्य लाभ होता है।

यज्ञ में हम वेदों के मन्त्रों को बोलकर आहुति देते हैं। इससे उन–उन मन्त्रों में जो व्याख्यान हैं उनको जानने से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना, ईश्वर प्रदत्त इस विषय के यथार्थ वचनों व शब्दों अर्थात् वेदमंत्रों द्वारा हो जाती है जो कि किसी मानव निर्मित शब्दावली से कहीं अधिक श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर व श्रेष्ठतम है। मंत्रोच्चार करने से मन्त्र कण्ठस्थ हो जाने से इनकी रक्षा व संरक्षण भी होता है। प्रातः सायं यज्ञ के मन्त्रों का उच्चारण करने से सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर हमारी वेदमन्त्रों में निहित, कथित व प्रस्तुत स्तुति व प्रार्थना वचनों से प्रसन्न होकर तदानुसार मांगी गई वस्तुओं जिसमें ज्ञान, स्वास्थ्य, श्रेष्ठ बुद्धि, परोपकार व सेवा की भावना, धन व वैभव, लम्बी आयु, अच्छे मित्र, द्वेषी शत्रुओं का नाश, सुसंस्कार स्वयं व परिवारजनों को मिलते हैं। यज्ञ करने वाले के पड़ोसी भी ज्ञानपूर्वक व डर कर अपना द्वेष छोड़ देते हैं क्योंकि ईश्वर की सत्ता व कर्म–फल सिद्धान्त को सभी का अन्तःकरण स्वीकार करता है। सभी के मन में कहीं न कहीं यह विचार आता है कि यह व्यक्ति धार्मिक है, स्वाध्याय करता है, सन्ध्या व यज्ञ करता है अतः ईश्वर की इस पर कृपा है। यदि हम इसका अनिष्ट सोचेंगे तो हो सकता है कि ईश्वर के द्वारा हम दण्डित किए जाएँ। इसका अहसास सभी को नहीं तो कुछ को तो होता है। ईश्वर का सहाय तो सन्ध्या, अग्निहोत्र आदि पंचमहायज्ञ करने वाले तथा वेद आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय, सेवा व परोपकार के कार्य करने वालों को मिलता ही है। यज्ञ के अवसर पर हमारा सम्पर्क अनेक सज्जन पुरूषों से भी होता है। घर में पुरोहित व विद्वानों का यदा–कदा आगमन होता रहता है जिनके ज्ञान व अनुभवों के साथ उनकी सदभावना, शुभकामनाओं वा आर्शीवादों से भी यज्ञकर्त्ता लाभान्वित होते हैं। इसे देवपूजा व संगतिकरण का लाभ कह सकते हैं। ऐसा करके सम्पर्क में आए विद्वानों के परामर्श से हम अपने जीवन की सभी उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझा सकते हैं। यज्ञ का एक आवश्यक अंग दान भी है जो यज्ञ करने से होता है व मिलता है। यज्ञ में

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# रूढ़ियों की बेड़ियाँ तोड़ती बेटियाँ

● देव नारायण भारद्वाज

रूढ़ियाँ क्या हैं? वही जिनका न सर होता है न पैर, किन्तु चल पड़ती हैं कतिपय रीतियाँ या कुरीतियाँ। इनका किसी धर्म शास्त्र में वर्णन नहीं होता है; किन्तु अलिखित तथा कथित **'डुकरिया पुराण'** ही इनका स्रोत होता है। बारात के प्रस्थान की भीड़ भरी तैयारी चल रही थी। घर में एक बिल्ली उछल कूद कर रही थी। बुढ़िया दादी ने उसे टोकरी के नीचे बन्द कर दिया और भूल गयी। बारात चल गई। दूसरे दिन बुढ़िया दादी ने टोकरी हटा कर देखी, तो बिल्ली दम घुटने से मर चुकी थी। वयोवृद्ध बुढ़िया दादी भी दिवंगत हो चुकी थी। अब जब भी इस घर से कोई बारात प्रस्थान करती, तो एक बिल्ली टोकरी के अन्दर बन्द करने की परिपाटी चल पड़ी। ऐसी एक नहीं सैकड़ों रूढ़ियों की बेड़ियों में समाज जकड़ा पड़ा है। घर से बाहर गमन करने पर बिल्ली रास्ता काट जाए, तो चूहे तक डरते नहीं, किन्तु मनुष्य अपनी यात्रा स्थगित कर के लक्ष्य से अवश्य भटक जाते हैं। पौराणिक पण्डित दक्षिणा ले लेकर यजमान को इनमें उलझाते रहते हैं।

इसी वर्ष (2016 में) बेटी साक्षी ने पुरुषों के वर्चस्व वाली कुश्ती में जहाँ पदक जीत कर खलबली मचा दी और रियो ओलम्पिक में भारतभूमि को गौरवान्वित कर दिया, वहीं अलीगढ़ की बेटी प्रीति शर्मा ने साहसिक कदम उठाकर रूढ़िवादियों को आइना दिखा दिया। परम्परानुसार महिला या लड़की शव को न तो कन्धा दे सकती है और न उसे मुखाग्नि ही। रूढ़िवादी इसे सही सिद्ध करने के तमाम तर्क देते हैं। प्रीति शर्मा ने ऐसी निरर्थक प्रथा को करारा झटका दे डाला। निजी कम्पनी के अधिकारी पद से सेवानिवृत विनोद शर्मा का निधन हो गया। उनके कोई बेटा नहीं, अपितु दो पुत्रियाँ हैं। बड़ी बेटी प्रीति शर्मा दिल्ली स्थित एक कम्पनी में प्रबन्धक है, और दूसरी छोटी बेटी गार्गी एम.ए. की छात्रा है। पिता की मृत्यु पर बड़ी बेटी प्रीति शर्मा ने न केवल अपने मृतक पिता को कन्धा दिया, प्रत्युत श्मशान में जाकर उन्हें मुखाग्नि भी दी। इस दुःखद समय पर प्रीति शर्मा ने जो वक्तव्य दिया, उसे सुनकर रूढ़िवादियों की आँखें खुल गईं और उदारवादियों ने इसका समर्थन करके समाज के सुधार के लिए सामयिक बताया। प्रीति शर्मा ने कहा था–"मैं उनकी सन्तान हूँ। पिता ने मुझे बेटे की तरह ही पढ़ाया और पालन किया। इसलिए यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं वह सब करूँ जो एक बेटा करता है।"

समग्र समाज के लिए सशक्त मार्ग दर्शन की भूमिका प्रदायक एक प्रेरक प्रसंग को प्रस्तुत करने का लोभ संवरण नहीं हो रहा है। प्रसन्नतापूर्ण प्रिय सम्बन्धों के प्रति जोखिम की भय भावना के बाद भी समाज के दिशादर्शन हेतु इसका वर्णन उचित लगता है। विश्वविद्यालय के स्तर के धर्म–समाज महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान के प्रो. आर.एन. बनर्जी पहले सेवा निवृत्त हुए। कुछ वर्षों बाद उसी कॉलेज से प्रोफेसर व अनुशासन नियन्त्रक रहीं उनकी धर्म पत्नी डॉ. उमा बनर्जी भी सेवा निवृत्त हो गईं। बीसों वर्ष तक यह सेवानिवृत्त दम्पत्ती समाज के उपकार कार्यों में संलग्न रहे। आवास पर कॉलेज के प्राध्यापकों का मार्ग दर्शन हेतु आना–जाना बना रहता था। दम्पत्ती ने अपने तीन पुत्रों को सुयोग्य शिक्षित बनाकर समर्थ पाणिग्रहण द्वारा गृहस्थ बना दिया।

प्रोफेसर दम्पत्ती शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य सभाओं में आमन्त्रित किए जाते, आयोजक इनकी उपस्थिति को अपना सौभाग्य मानते। प्रोफेसर महोदय वृद्धावस्थावश रुग्ण होते, ठीक होते, घर आ जाते। सितम्बर 2016 में डाक्टरों के वेन्टीलेटर पर ले जाने के आग्रह को ठुकरा कर श्रीमती डॉ. उमा बनर्जी घर ले आईं, जिससे उनकी अन्तिम विदाई हो तो एकान्त यन्त्र पर न हो, प्रत्युत अपनों के बीच हो। हम सब लोग उनसे मिलते, उनके द्वारा गायत्री उच्चारण होता, और योग्य सेवकों द्वारा उनकी सक्षम सेवा होती। इसी मध्य उनका निधन हो गया। प्रोफेसर साहब की इच्छा के अनुसार ही उनके सभी अन्तिम संस्कार, यहाँ तक कि मुखाग्नि भी, श्रीमती डॉ. बनर्जी द्वारा दी गई। उनके इस धैर्य एवं साहस के लिए लेखक ने सदैव उनको प्रणाम कर प्रेरणा प्राप्त की।

उपरिलिखित धर्मसमाज महाविद्यालय से सेवा निवृत्त प्रोफेसर डॉ. रक्षपाल सिंह जो आगरा विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के सक्रिय अध्यक्ष रहे हैं और समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष भी, वे निष्पक्ष व न्यायप्रिय चिन्तक हैं और शिक्षा के क्षेत्र में निर्मित की गई अहितकारी नीतियों का विरोध करते हैं, और नकल की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की माँग करते हैं। अब उन्होंने समाज में व्याप्त तेरहवीं जैसी मृत्युभोज प्रथाओं पर अंकुश लगाने के लिए ग्राम–ग्राम में भ्रमण कार्य से जनजागरण प्रारम्भ कर दिया है। इस अभियान में प्रबुद्ध जन उनका भरपूर सहयोग कर रहे हैं। सद्भावना एवं इच्छा शक्ति से कोई आन्दोलन किया जाता है तो देर सवेर उसके सुपरिणाम अवश्य मिलते हैं। उनके सहयोगी प्रोफेसर डॉ. राजेन्द्र सिंह मनोयोग से जुटे हैं और तथाकथित साईं परिक्रमाओं से नष्ट हुए पार्क को पुनर्जीवन प्रदान करने में लगे हुए हैं।

**'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग**
**अलीगढ़–202001 (उ.प्र.)**

---

☞ *पृष्ठ 06 का शेष*

# यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम...

प्रयोग किए गए द्रव्यों, यजमान का यज्ञ में लगने वाला समय तथा पुरोहित व विद्वानों आदि को दी जाने वाली दक्षिणा दान के अन्तर्गत आती है जिसका पुण्य यजमान व उसके परिवार को ईश्वर की कृपा व व्यवस्था से प्राप्त होता है। अतः यज्ञ करने से लाभ ही लाभ हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक मनुष्य, स्त्री व पुरुष को प्रतिदिन प्रातः व सायं यज्ञ करना चाहिए। यदि किसी के पास धन वा द्रव्यों का अभाव व अल्पता है और यदि वह आहुतियाँ देकर यज्ञ नहीं कर सकता तो वह शुद्ध व पवित्र होकर एकान्त व शान्त स्थान में बैठ कर आत्मिक यज्ञ ही कर ले, उससे भी कुछ कम या अधिक लाभ उसे होगा, ऐसा हमारा अनुमान है। वेद मन्त्रों में यह भी प्रार्थना है कि हम जो–जो कामना करें वह हमारी सिद्ध हों तथा हमारी इच्छानुसार वर्षा हो। यज्ञ करने से मोक्ष की प्राप्ति में भी सहायता मिलती है जो कि महर्षि दयानन्द के ईश्वर के प्रति समर्पण वचनों ''हे ईश्वर दयानिधे! **भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः**'' से विदित होती है।

अब यज्ञ से हानियों पर भी चर्चा कर लेते हैं। यज्ञ के विरोधी लोग प्रायः प्रमुख आरोप यह लगाते हैं कि यज्ञ करने से 'कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस' बनती है। यह बात कुछ–कुछ ठीक हो सकती है। यहाँ यह विचारणीय है कि अग्नि के जलने से यदि हानिकारक कार्बन डाई ऑक्साइड गैस बनती है तो क्या हम भोजन बनाना, वाहन चलाना व अपने सभी उद्योग–धन्धों को बन्द कर रहे हैं या करेंगे क्योंकि इन कार्यों से भी कार्बन डाइ ऑक्साईड व अन्य विषैली गैसों का उत्सर्जन होता है। जब हमारे अनेक कार्यों से वायु मण्डल प्रदूषित हो रहा है तो फिर यज्ञ से अल्प मात्रा में बनने वाली कार्बन गैस की चिन्ता क्यों की जाती हैं? ऐसे लोग तो यज्ञ–द्वेषी ही कहे जा सकते हैं जो अन्यायपूर्ण कथन करते हैं। यज्ञकुण्ड की अग्नि के परिमाण के अनुपात में ही कार्बन गैस बनती है जिसे स्वीकार्य (permissible) सीमा में कहा जा सकता है। यदि हमने अपने आस–पास कुछ वृक्ष लगा दिए तो यज्ञ में बनने वाली कार्बन गैस की अल्पमात्रा उन वृक्षों के भोजन का कार्य करेगी जिससे हमारा यह कार्य भी एक अतिरिक्त परोपकार का कार्य होगा। यह कार्य हमारी ओर से वृक्षों के लिए दान होगा जिनसे हमें ऑक्सीजन वा प्राणवायु प्राप्त होती है। अतः यज्ञ पर कार्बन गैस के उत्सर्जन का आरोप हमें निराधार लगता है। इसके वैज्ञानिक आँकड़े हमारे पास नहीं हैं कि लकड़ी व कोयले से जलने वाले चूल्हे, एलपीजी चूल्हे, वाहन से उत्सर्जित अनेकानेक विषैली गैस कितनी मात्रा में बनती है जिससे यज्ञ से बनने वाली कार्बन गैस की मात्रा से तुलना कर सकें। हमारे वैज्ञानिक इस कार्य में हमारी सहायता करें तो हमें लगता है कि यह परिणाम सामने आएगा कि यज्ञ से कोई हानि नहीं होती अपितु लाभ अगणित होते हैं जिनमें से हम कुछ लाभों का ही अनुमान कर सकते हैं। महर्षि दयानन्द ने लिखा है यज्ञ न करने से पाप होता है। यह इस प्रकार कि यज्ञ से होने वाले अनेकानेक लाभों को न करके व हमारे कारण जो वायु–जल–भूमि में प्रदूषण हो रहा है उसका निवारण न करने से। अतः लाभकारी यज्ञों को न करने से हम पापी बनते हैं जिससे बचने का एक ही उपाय है कि हम नित्यप्रति हवन करें और स्वयं व दूसरों का जीवन सुखी व निरोग बनाएँ। इन्हीं पंक्तियों के साथ हम इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हुए पाठकों से निवेदन करना चाहते हैं कि इस विषय में महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का स्वाध्याय कर अपना कर्तव्य निर्धारित करें जिसका पालन करने से सभी मनुष्यों को लाभ होगा।

**196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोन:09412985121**

www.thearyasamaj.org



# ये हैं नैतिकता के नए ठेकेदार

● दिलचस्प

संवैधानिक सदन (संसद) में दो-ढाई दशकों से शोर-शराबा, वाक आउट, हो हल्ला, झगड़ा आदि की घटनाएँ आम हो गई हैं और इस सदन के सत्र बोझिल भी। नैतिकता की बातें तो केवल कागजी रह गई हैं। किसी वक्त ससंद मे तार्किक विचार मंथन होता था, शेरो-शाइरी का दौर चलता था, मीठी चुहलबाजी तक होती थी। राजनीति के पुरोधा पं. जवाहर लाल नेहरु ने संसद को अभिमानित आयाम दिए थे। 'डिस्कवरी आफ इंडिया' जैसी अनमोल और ज्ञानार्जक पुस्तक का सर्जन किया था। प्रधानमंत्री पंडित नेहरु ने संसद में अपनी व्यथा इस शेर के माध्यम से प्रकट की थीः

**हम आह भी भरते हैं तो हो जाते बदनाम**
**वो कत्ल भी करते है जो जिक्र नहीं होता।**

और संसद के बाहर तो अधिकतर फिकरा कसने के अलावा सार्थक बयानबाजी न के बराबर होती है? अभी गंगा के समान पवित्र हमारे प्रधानमंत्री जी ने एक जनसभा में नौसीखिए राहुल गांधी पर कई प्रकार की फब्तियाँ कसीं? जवाब में एक जनसभा में राहुल गांधी ने गालिब के एक शेर के माध्यम से बहुत कुछ कह दिया।

**हरेक बात पर कहते हो कि तू क्या है**
**तुम्हीं कहो कि अंदाजे गुफ्त-गू क्या है?**

हमारे प्रधानमंत्री जी सर्वगुण सम्पन्न हैं मगर भाषणबाजी में अक्सर पद की गरिमा के विपरीत सम्भाषण कर जाते हैं? उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव सिर पर हैं। प्रधानमंत्री जी कालेधन एवं बेईमानों के विरुद्ध जेहाद छेड़े हैं तो अन्य वक्ता आम आदमी को नोटबंदी के नगाड़े पर लाइन में लगाने पर अपने बोल-बोल रहे हैं। राहुल गांधी ने फिर से जनसभा में एक शेर पेश कियाः

**लोग टूट जाते हैं, इक घर बनाने में**
**तुम तरस नहीं खाते, बस्तियाँ जलाने में।**

कांग्रेस राज में भाजपा के लालकृष्ण आडवाणी ने अनेक जन सभाओं में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह सदैव गरिमा में रहे और आडवाणी जी के तंज कसने पर भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

संसद में शेरो-शाइरी को उचित स्थान दिलाया, बिहार की युवा सांसद एवं तत्कालीन केन्द्रीय राज्य वित्त मंत्री श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ने। श्रीमती सिन्हा जब कभी भी संसद में बोलती एवं अपने कथन का समापन करती, तब दोनों ही बार शेर अवश्य पेश करती-

**यहाँ मजबूरियाँ रही होंगी,**
**वर्ना कोई बेवफा नहीं होता**
**रात का इन्तजार कौन करे,**
**आजकल दिन में क्या नहीं होता?**

श्रीमती सिन्हा ने शेर को चर्चित कियाः

**जमीं पे था जिसका दबदबा,**
**और बुलंद ए अर्श तक नाम था**
**उन्हें यूं फलक ने मिटा दिया कि**
**मजार तक का निशां नहीं।**

श्रीमती सिन्हा की जिन्दादिली तो यहाँ तक थी कि संसद से विदा होने पर उन्होंने ये शेर कहा थाः

रहे तारके तू हंसती खेलती, मौजे हवादस से अगर आसानियाँ हों, जिन्दगी दुश्वार हो जाए।

तारकेश्वरी सिन्हा ने मासिक पत्रिका कादम्बिनी में दो दशक पहले अपने संस्मरण लिखे थे। उन संस्मरणों को लेकर इस लेखक ने श्रीमती सिन्हा को शाबासी के बतौर पत्र लिखा था। उनका प्रत्युतर आया जिसमें शेर शब्दावली का पुट था। श्रीमती सिन्हा के पत्र की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैः दिलचस्प यदि आपका पता है तो अस्तित्व भी उतना ही प्रभावशाली होगा.... एक हजार चिटियाँ डाक में मिली। उत्तर कैसे दूं, तो फिर अपनी अंगुलियों को टटोला आपके तीन पत्र आ चुके थे-तीसरा शिकायत से भरा था। इसलिए उत्तर दे रही हूँ। क्या आपसे कुछ कहने की गुस्ताखी करूं कि अपनी अंगुलियों से मेरी अंगुलियाँ कृपया बदल लें...। लेख की इतनी तारीफ मत कीजिए, जिससे कि मुझ में खुदाई का अहसास पैदा होने लगे...। तारकेश्वरी सिन्हा, 25-01-1989

बजट प्रस्तुति के वक्त या यदा कदा अन्य अवसरों पर संसद में शेर-अशआर की प्रस्तुति हो जाती है। सांसद वसुंधरा राजे (जो बाद में राजस्थान की मुख्यमंत्री बनी) भी अकसर सदन में शेर की प्रस्तुति करती रही हैं। उनका पसंदीदा शेर हैः

**हम परों से नहीं, हौसलों से उड़ा करते हैं।**

सांसद जूदेव को तब तहलका ने स्टिंग आपरेशन में रिश्वत लेते हुए दिखाया तब जूदेव ने कहा थाः

**माना कि पैसा खुदा नहीं होता**
**पर खुदा की कसम, खुदा से कम भी नहीं होता।**

संसद में 23 मार्च, 2011 को शेर दौर चला, मगर एक तरह से आंशिक छींटाकशी या मुकाबला कव्वाली रूप में। संसद में विकीलिक्स मसले पर चल रही बहस में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह पर लगे तथाकथित आरोपों के सिलसिले में भाजपा सांसद सुषमा सवराज ने कहाः

**तू इधर उधर की बात न कर,**
**ये बता कि कारवां लुटा क्यों**
**मुझे रहजनों से गिला नहीं,**
**तेरी रहबरी का सवाल है।**

मनमोहन सिंह ने भी सुषमा के शेर के प्रत्युत्तर में कहाः

**माना कि तेरी दीद के काबिल नहीं हूँ मैं**
**तू मेरा शौक देख, इन्तजार देख।**

संसद को बोझिल और हंगामा का केन्द्र बनाने की बजाय तार्किक और शेर टाइप के मिठास दौर चलते रहे तो इस सदन के प्रति आम भारतीयों का रुझान बना रहेगा, अन्यथा एक अखाड़े के रूप में ही इसकी तुलना की जाती रहेगी। खाकसार ने नेता के बारे में लिखा हैः

नेता थे नेताजी सुभाष, गौरव का रच डाला इतिहास
अब हैं नेता कुर्सी के दास, गैरत का रच डाला इतिहास।

संसद या संसद के बाहर जब तक नेतागण राष्ट्रीयता के भाव ग्रहण नहीं करेंगे और अपने उद्बोधन में संयम या गरिमा नहीं रखेंगे तो उनके बारे में यही कहा जा सकेगाः

अनैतिकता की पौध लगाकर, नैतिकता की बातें करते हैं
उन बाग बहारों को 'दिलचस्प' राजनीति में नेता कहते हैं।

**दैनिक युगपक्ष, बीकानेर (राजस्थान)**

---

## काली मिर्च के लाभ

**आयुर्वैदिक मत**-कटुरस-लघुतीक्षण-उष्णवीर्य कटु विपाक है। यह कफ वात कृमि शामक है। पितकारक है। यह दीपन या मन शूल नाशक है तथा कृमि नाशक है। कफ निस्सारक है। अतः कास श्वास में लाभ करती है। यह नेत्रों के लिए हितकारक हैं। कुष्ट आदि चर्म रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है।

**यूनानी मत**-काली मिर्च उष्ण और रूक्ष है अतः यह उदरपीड़ा डकार और अफ़ारा मिटाकर कामोत्तेजन एवं विरेचन करती है। बार-बार आने वाली डकार, अरुचि, दंतशूल , मसूड़ों की सूजन, यकृत पीड़ा, प्लीहा वृद्धि कटिवाले पक्षाघात श्वेत कुष्ट तथा नेत्ररोग पर हितकारी है।

**वैज्ञानिक मत-फल के छिलके में माईग्रिन होता है।**

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है यह उत्तेजक दवा है पेट के अफ़ारे, हैजा, भूख बंद होने पर पाचन की खराबियों पर लाभ देती है। घी के साथ मिलाकर त्वचा के रोगों पर लगाया जाता है।

डॉ. देसाई ने बताया है यह अर्शकी उत्तम औषध है और मूत्र को बढ़ाती है। कुछ उष्ण अग्नि दीपक है, वात हर उत्तेजक है।

**प्रयोग**

1. जुकाम के लिए सौंठ की अपेक्षा काली मिर्च अच्छी है।

2. वात, कफ के विकारों, जुकाम खांसी और सांस में उपयोगी है।

3. सभी प्रकार के वैक्टरिया वायरस आदि का सर्वनाश करती है।

4. गर्भ दूध में काली मिर्च की बुकनी से जुकाम मिटता है।

5. काली मिर्च का चूर्ण शहद के साथ लेने से खांसी मिटती है।

6. काली मिर्च का चूर्ण शर्करा और घी के साथ सिर चकराना बंद करता है।

7. काली मिर्च का चूर्ण नींबू के रस के साथ लेने से उदर-शूल मिटता है।

8. काली मिर्च का चूर्ण छाछ के साथ लेना हितकर है।

9. काली मिर्च का चूर्ण, तुलसी का रस, शहद के साथ लेने से विषमज्वर मलेरिया मिटता है।

**प्रस्तुति : हरिश्चंद आर्य, अमरोहा, मुरादाबाद मंडल (उ.प्र.)**

www.thearyasamaj.org



☞ पृष्ठ 02 का शेष

# आनन्द गायत्री कथा

है। किन्तु कैसे खुले उसका मुँह? कौन कहे उस विद्युत् या सर्पिणी से कि खोल अपने मुँह को तथा जाग और योग की महाशक्ति दे दे, जिससे ऊपर उठने और ब्रह्म–रन्ध्र में चमकती हुई विशाल ज्योति का दर्शन करने के योग्य हो जाएँ? शिव जी ने पार्वती जी से कहा–"गायत्री के जाप से, गायत्री की उपासना से उस कुण्डलिनी का मुँह खुल जाता है। और फिर एक–एक करके आठों चक्र खुलने लगते हैं।" इसलिए शास्त्र ने गायत्री को पृथिवी की कामधेनु कहा है। कामधेनु और कल्पवृक्ष में ऐसा विश्वास किया जाता है कि उनसे जो भी माँगो, वह मिल जाएगा। जो भी इच्छा करो वह पूरी हो जाएगी– यह तो काल्पनिक बात है, किन्तु शास्त्रों ने गायत्री मन्त्र को पृथिवी की, इस संसार की कामधेनु कहा है। संसार की प्रत्येक वस्तु उससे प्राप्त होती है। वह वेद–माता और संसार–माता है। भगवान् शिव और माता पार्वती का जो संवाद मैं आपको सुना रहा हूँ, उसी में आगे चलकर शंकर महाराज ने कहा–"हे पार्वती! कलियुग में मनुष्य के शरीर में पृथिवी–तत्त्व प्रधान होता है। तुम तो जानती हो कि उससे पूर्व के युगों में मनुष्य–शरीरों में यह तत्त्व अधिक नहीं होता था; इसलिए कलियुग में मनुष्य को वह सिद्धि नहीं मिलती जो पूर्व–युगों में मनुष्य को मिलती रही है।" किन्तु यह तो बहुत चिन्ता का विषय है। ईश्वर ने यदि कलियुग के मनुष्य को सिद्धि प्राप्त करने के लिए बनाया ही नहीं, यदि उसने उसमें पृथिवी–तत्त्व को ही प्रधान कर दिया है तब यह सिद्धि मिलेगी कैसे? पार्वती ने घबराकर कहा–"महाराज! तब कलियुग में मनुष्यों का उद्धार कैसे होगा?" शंकर महाराज मुस्कराकर बोले–"घबराओ नहीं पार्वती! गायत्री वह साधन है जिसको अपनाकर, जाप करके कलियुग का मनुष्य भी सिद्धि को प्राप्त कर सकता है। जो गायत्री को अपनी माता मानकर, उसकी गोद में जाकर अपने–आपको उनके चरणों पर अर्पण कर देता है, उसे वे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं जो कि उससे पहले युगों के मनुष्यों को सूक्ष्म तत्त्वों की प्रधानता के कारण प्राप्त होती थीं। गायत्री परम तप है। गायत्री परम योग है। वह परम साधन और परम ध्यान है। वह सिद्धियों की माता है। उससे बढ़कर संसार में और कुछ नहीं। परन्तु केवल जप से नहीं, गायत्री मन्त्र के अर्थों को जीवन में भली–भाँति ढालने से सफलता मिलती है।"

यह है गायत्री की महिमा, जो गायत्री मन्त्र में गायन की गई है। किन्तु केवल इतना ही नहीं, जितने भी योगी–मुनि हुए हैं, उन्होंने मुक्त कण्ठ से गायत्री को बड़ी महिमावाली बताया है। विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य, वसिष्ठ, भारद्वाज, सबने गायत्री की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है–उससे बढ़कर और कुछ भी नहीं है। और तो और, स्वयं महर्षि चरक ने जिसने 'आयुर्वेद' शास्त्र की रचना की, अपने ग्रन्थ में कहा–जो स्त्री–पुरुष एक वर्ष तक आँवले का रस पीकर, प्रतिदिन प्रातःकाल गायत्री का जाप करे, उसकी आयु निःसन्देह 116 (एक सौ सोलह) वर्ष की होती है।

देखो मेरी माँ! कितना सरल नुस्खा है यह! आँवले का रस और गायत्री का जाप। फिर न किसी डॉक्टर की आवश्यकता, न वैद्य की; न पेनिसिलीन की, न कोरोमाइसीन की। परन्तु प्राचीन सन्तों और विद्वानों से हटकर आजकल के सन्तों और महात्माओं को देखो तो वे भी गायत्री के गुणगान करते हुए मिलेंगे। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, श्री अरविन्द घोष, श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, जगद्गुरु शंकराचार्य, सबने एक–स्वर में गायत्री की महिमा का वर्णन किया है। एक–एक करके उनकी बात मैं आपको सुनाता हूँ।

श्री रामकृष्ण परमहंस कहते हैं–'गायत्री का जाप करने से शक्ति प्राप्त होती है।'

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं–'गायत्री सद्बुद्धि देती है। परमात्मा से यदि कोई तत्त्व मेल कराता है तो वह है सद्बुद्धि। जिसकी बुद्धि ठीक हो जाए उसके सभी कार्य ठीक होते है।'

महाकवि टैगोर कहते हैं–'भारत को जगानेवाला, यह सीधा सा महामन्त्र है। गायत्री मन्त्र से अधिक सुन्दर और कोई भी पदार्थ है, यह मैंने आज तक नहीं देखा। इसके पहले चार शब्दों का उच्चारण करता हुआ, 'ओ३म् भूः भुवः स्वः' कहता हुआ भक्त यह अनुभव करता है जैसे सारा जगत्, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मेरा घर है। लोक और परलोक इस घर के भीतर हैं। ऐसा विदित होता है जैसे वह सूर्य और चन्द्र, नक्षत्रों और ग्रहों के मध्य खड़ा है। प्रत्येक ओर ज्योति नाच रही है। प्रकाश की नदियाँ बह रही हैं और उन सब–की–सब नदियों के साथ मेरा सम्बन्ध है। गायत्री मन्त्र का जाप करनेवाले को यह अनुभव करना चाहिए कि वह पृथिवी से ऊपर उठकर अनन्त आकाश में अनन्त नक्षत्रों के बीच खड़ा है। वहाँ पहुँचकर उसे गायत्री का उच्चारण करना चाहिए। ब्रह्म का ध्यान करने की यह प्राचीन विधि सर्वोत्तम है। इससे अधिक उत्तम और कोई योग–प्रणाली नहीं। इस विधि को ग्रहण करके मनुष्य सदा के लिए भगवान् से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। किसी अन्य विधि से यह बात नहीं होती।'

लोकमान्य तिलक कहते हैं–'यदि कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर ले जाना हो तो गायत्री मन्त्र की उपासना करो। गायत्री मन्त्र के जाप से पाप–मैल दूर होता है। मनुष्य को यह प्रेरणा मिलती है कि वह ईश्वर के समीप किस प्रकार पहुँच सकता है।'

पूज्यपाद पण्डित मदनमोहन मालवीय कहते हैं–'गायत्री में मनुष्य को ईश्वर–विश्वासी बनाने की महान् शक्ति है। गायत्री मन्त्र जहाँ आत्मा को परमात्मा के साथ मिलाता है और उसका दर्शन करा देता है, वहाँ संसार के सकल पदार्थ भी देता है। इससे अधिक शक्तिशाली मन्त्र मैंने देखा नहीं।'

महात्मा गांधी प्रतिदिन गायत्री–जाप करते थे। इस जाप के विषय में वे लिखते हैं–'मन को लगाकर और चित्त को शान्त करके गायत्री मन्त्र का जाप किया जाए तो प्रत्येक प्रकार के संकटों का विनाश होता है। आत्मोन्नति के लिए यह मन्त्र अत्यन्त लाभदायक है।'

डॉ. सर राधाकृष्णन कहते हैं–'गायत्री मनुष्य को फिर से नया जीवन देनेवाली, अनुपम प्रार्थना है।' इसी प्रकार जगद्गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, स्वामी विरजानन्द और दूसरे सभी महात्माओं ने गायत्री की अपार महिमा का वर्णन किया है।

गायत्री की महिमा गाते हुए वे किसी भी समय थकते नहीं।

क्रमशः....

☞ पृष्ठ 04 का शेष

# अर्थ–शुचिता सर्वोपरि है!

शुद्धि सबसे मुख्य है। जो मनुष्य धन के विषय में शुद्ध है, वास्तव में वही शुद्ध है–मिट्टी और जल से शुद्ध हुआ यथार्थ में शुद्ध नहीं है। व्यक्ति को चाहिए कि वह कभी किसी दुष्ट से प्रसंग अर्थात् गलत ढँग से धन का संचय न करे, न विरुद्ध कर्म से । न विद्यमान पदार्थ होते हुए उनको गुप्त रख के, दूसरे से छल करके और चाहे कितना ही दुःख पड़े तदपि अधर्म से द्रव्य संचय कभी न करे। जो अधार्मिक मनुष्य है, और जिसका अधर्म से संचित किया हुआ धन है, और जो सदा हिंसा में अर्थात् वैर में प्रवृत्त रहता है, वह इस लोक और परलोक अर्थात् परजन्म में सुख को कभी नहीं प्राप्त हो सकता ।

**नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।**
**शनैरावर्त्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति।।**

**यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत् पुत्रेषु नप्तृषु। न त्वेवन्तु कृतोऽधर्मः निष्फलः।।**

**सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचे चैवारमेत् सदा।**
**शिष्यांश्च शिष्याद् धर्मेण वाग्बाहूदरसयतः।।**

(मनु. 4–172,173,175)

मनुष्य निश्चित् करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता, वैसे ही किए हुए अधर्म का फल शीघ्र नहीं होता। किन्तु धीरे–धीरे अधर्म कर्त्ता के सुख के मूलों को काट देता है। पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है। यदि अधर्म का फल कर्त्ता की विद्यमानता में न हो तो पुत्रों, और पुत्रों के समय में न हो तो नातियों के समय में अवश्य प्राप्त होता है। किन्तु यह कभी नहीं हो सकता कि कर्त्ता का किया हुआ कर्म निष्फल हो जाए। इसलिए मनुष्यों को चाहिए कि सत्य धर्म और आर्य अर्थात् उत्तम पुरुषों के आचरणों, और भीतर बाहर की पवित्रता में सदा रमण करें। अपनी वाणी, बाहु, उदर को नियम और सत्यधर्म के साथ वर्तमान रखके शिष्यों को सदा शिक्षा किया करें। इसलिए आदेश दिया गया है–

**परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ।**
**धर्मं चाप्यसुखोदर्कं लोकविकुष्टमेव च।।**

(मनु. 4–176)

यदि बहुत से धन, राज्य और अपनी कामना अधर्म से सिद्ध होती हो तो भी अधर्म सर्वथा छोड़ दे और वेद–विरुद्ध धर्माभास जिसके करने से उत्तर काल में दुःख और संसार की उन्नति का नाश हो वैसा नाममात्र धर्म और कर्म कभी न किया करें।

जिस समाज में पाप की कमाई से अपना घर भरने की वृत्ति बन जाती है वहाँ आपसी प्रेम एवं सौहार्द और आत्मिक शान्ति समाप्त हो जाती है। सबसे बड़ी हानि यह होती है कि सन्तान पर कुसंस्कार पड़ने से परिवार बिगड़ते हैं और उनके बिगड़ने से सामाजिक समरसता ही समाप्त हो जाती है। अर्थ–प्रधान चिन्तन व्यक्ति को हृदयहीन बना देता है। जो लोग अधर्म से धन कमाकर सुख–शान्ति प्राप्त करने की सोचते हैं उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा होना संभव नहीं है। धन की अपनी सीमाएँ है–स्मरण रहे कि धन से उत्तम स्वास्थ्य नहीं मिल सकता है, धन से विद्या नहीं मिल सकती हैं, धन से सन्तोष नहीं मिल सकता है, धन से माता,पिता, भाई, पुत्र और पति–पत्नी नहीं मिल सकते हैं, धन से मित्रता नहीं मिल सकती है, धन से सुसंस्कार नहीं मिल सकते हैं, धन से सुख–शान्ति नहीं मिल सकती है, धन से मानसिक सबलता नहीं मिल सकती है और धन से आत्मिक आनन्द नहीं मिल सकता है...........

**महर्षि दयानन्द धाम,**
**महादेव, सुन्दरनगर**
**–175019, हि.प्र**

www.thearyasamaj.org



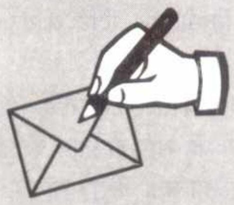

# पत्र/कविता

## कथनी और करनी में फर्क क्यों?

18वी शताब्दी में महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द जी के अथक प्रयासों से यज्ञ वेदी पर स्त्री और पुरुष एक साथ बैठकर यज्ञ करने में सफल हुए। यह उस समय का सबसे प्रमुख समाज सुधार था उससे पूर्व स्त्री के पुरुष के बराबर खड़े होने या बैठने की परम्परा नहीं थी। इसी श्रृंखला में स्वामी जी ने आर्य कन्या पाठशालाओं की स्थापना का बीड़ा उठाया और सुदूर ग्रामीण आंचलों में कन्या पाठशालाएँ स्थापित की गईं।

परन्तु यह खेद है कि 21वी सदी में अधिकांश आर्य समाजों में अधिकांशतः आर्य समाज के पदाधिकारी केवल पुरुष ही रहते हैं महिलाओं को प्रमुखता क्यों नहीं? क्या आर्य महिलायें प्रबन्ध कार्यों में निपुण नहीं होतीं? यह भी खेद है कि अब सुदूर ग्रामीण आंचलों में मिशनरिओं के शिक्षा संस्थाओं को ज्यादा प्रमुखता प्रदान की जा रही है क्योंकि आर्य समाज सुषप्त अवस्था में आ गया है? गुरुकुल और कन्या पाठशालाएँ समय की मांग के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने में सक्षम नहीं लग रही?

क्या आर्य जागरूक होंगे? और कब?

**कृष्ण मोहन गोयल**
**113–बाजार कोटा, अमरोहा**

**********

## सब ईश्वर के गुण गाओ

ईश्वर की है अद्भुत माया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नही पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
निराकार सर्वज्ञ सर्वव्यापक है जग का स्वामी।
अजर अमर सर्वान्तर्यामी, अनादि अनुपम नामी।।
योगी–ऋषि–मुनियों ने ध्याया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
दयावान न्यायकारी प्रभुवर जग का पालन करता।
माता–पिता गुरु है सच्चा, सबके संकट हरता।।
यह वेदों में है दर्शाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
सूरज चाँद सितारे पृथ्वी, सागर अजब बनाए।
उँचे पर्वत गहरी घाटी, अद्भुत फूल खिलाए।।
वह नज़र किसी को ना आया सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
जो जैसी करनी करता है वह वैसा फल देता।
बदले में भगवान किसी से, कौडी एक न लेता।।
इसलिए दयानिधि कहलाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
जो ईश्वर के भक्त आर्यजन, वैदिक पथ अपनाते।
बड़े भाग्यशाली हैं वे सब, मोक्ष धाम वे पाते।।
कवियों ने प्रभु का गुण गाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
रावण बाली दुर्योधन से, नहीं रहे अभिमानी।
बाबर अकबर अब्दाली की, कहीं न बची निशानी।।
अभिमान पापियों का ढाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
राम कृष्ण ऋषि दयानन्द थे, ईश्वर भक्त निराले।
अर्जुण भीम शिवाजी बन्दा, थे योद्धा मतवाले।।
उनको भी काल ने था खाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
मानव तन अनमोल सज्जनो! इसे न व्यर्थ गंवाओ।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, काम जगत् के आओ।।
जो ना समझा वह पछताया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।
राजा–रंक, बली–निर्बल, जितने भी जग में आए।
"नन्दलाल" कह, काल जली ने, अपने ग्रास बनाए।।
अय बन्दे! क्यों तू बौराया, सब ईश्वर के गुण गाओ।
ईश्वर का पार नहीं पाया, सब ईश्वर के गुण गाओ।।

**पं. नन्दलाल निर्भय**
**आर्य सदन, बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)**
**चलभाष:–9813845774**

## ऋषि ने दिया ही दिया, लिया नहीं

1. गृह त्याग के बाद मूल शंकर जब सांयला में योगियों की तलाश में जा रहे थे तो उन्हें कुछ ब्राह्मण मिले जिन्होंने उन्हें समझाया कि परलोक में आपको वही प्राप्त होगा जो आप इस जीवन में दान दे देंगे। इन बातों से प्रभावित होकर मूलशंकर ने जो भी धन उनके पास था वह सब उन ब्राह्मणों को दे दिया।

2. जब स्वामी दयानन्द हिमालय में भ्रमण कर रहे थे तो ओखी मठ के महन्त स्वामी दयानन्द के चरित्र विद्वता, सत्यनिष्ठा, अपूर्व तेज एवं बुद्धिमत्ता से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने अपनी लाखों रुपये की गद्दी दयानन्द को सौंपने को कहा। स्वामी दयानन्द जी ने कहा यदि धन की चाहना होती तो अपना घर ही क्यों छोड़ते। मेरे पिता की सम्पत्ति आपके मठ से कहीं अधिक थी।

**हरिश्चन्द्र आर्य**
**अमरोहा मुरादाबाद उ.प्र.**

**********

## पाठक ध्यान दें

आर्य जगत् के पाठकगणों की सेवा मे निवेदन है कि महात्मा हंसराज जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सभा के साप्ताहिक 'आर्य जगत्' का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। अतः 23 अप्रैल से 29 अप्रैल 2017 का अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा जोकि 19–20 अप्रैल 2017 को पोस्ट होगा।

विशेषांक प्रकाशित करने के कारण 2 अप्रैल (2 अप्रैल से 8 अप्रैल), (9 अप्रैल से 15 अप्रैल) एवं 16 अप्रैल (16 अप्रैल से 22 अप्रैल) 2017 तक के अंक प्रकाशित नहीं होंगे।

**सम्पादक**

**********

## मुक्तक

कुवृत्तियों के घर दानव निश्चित अधिवासी होगा,
यायावरी होगी फितरत, मन सदा प्रवासी होगा।
सूर्पणखा होगी जहां वह कुल कभी बच न सकेगा,
जिस घर में मन्थरा होगी वहां राम वनवासी होगा।।
आदमियों की इस बस्ती में भगवान बहुत हैं,
उजले लिबासों के पीछे शैतान बहुत हैं।
हमें पता है सच्च बोलता जो इस दुनियां में
उसी शख्स पर यहां पर इल्जाम बहुत हैं।
जग के जुल्मों–सितम हौसले से सह क्यों नहीं लेता,
आग की ही सही इन दीवारों में रह क्यों नहीं लेता।
कब तक जलता रहेगा गम की भट्ठी में चुपके–चुपके,
तेरे दिल में जो सुलग रहा है, कह क्यों नहीं देता।।
पानी में भरे हुए भीतर से खाली समुन्दर देखे,
शंहनशाह मुट्ठी भर मिट्टी होते हुए मंजर देखे।
दूसरों के घर उजाड़कर तू भी बच सकता नहीं,
मरते हुए अहंकारी हमने कितने सिकन्दर देखे।।

**महात्मा चैतन्य मुनि**
**महादेव, सुन्दर नगर–175019 (हि.प्र.)**

**********

www.thearyasamaj.org



# डी.ए.वी. रुपनगर में आशीर्वाद दिवस मनाया गया

वार्षिक परीक्षाओं में शामिल होने वाले विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए डी.ए.वी. पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल रुपनगर (पंजाब) की ओर से आशीर्वाद दिवस मनाया गया। स्कूल के प्राचार्य संदीप कुमार ने बताया कि डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधक समिति नई दिल्ली के प्रधान आर्यरत्न श्री पूनम सूरी पदमश्री जी के दिशा निर्देशों तथा स्कूल के मैनेजर श्री रविन्द्र तलवाड़ जी के मार्गदर्शन में यज्ञ का आयोजन किया गया। स्कूल के शास्त्री जयपाल शर्मा ने आर्य समाज की विधि अनुसार आहुतियाँ डलवाईं। प्राचार्य ने स्कूल के विद्यार्थियों को जहाँ शुभ कामनाएँ दीं वहीं परीक्षा में पूरी तैयारी के साथ शामिल होने के लिए कहा। इस पर एन.सी.सी. अधिकारी सुनील कुमार, इकबाल सिंह अश्वनी शर्मा, रवी इन्द्र सिंह, मैडम संगीता, राजेश शर्मा, वीरेन्द्र सिंह, सुखवीर सिंह, मैडम नीलू मल्होत्रा आदि भी विशेष रूप से शामिल थे।

# डी.ए.वी. कॉलेज फिरोज़पुर में स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस मनाया गया

डी.ए.वी. कॉलेज, फॉर वूमेन, फिरोजपुर कैंट में युग पुरुष एवं महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया। जिसमें प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा सहित कॉलेज के समस्त स्टाफ व छात्राएँ उपस्थित थे। मुख्यातिथि के रूप में स्थानीय समिति के उपाध्यक्ष श्रीमान सतीश शर्मा जी विराजमान थे। सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ का संचालन श्री मनमोहन शास्त्री जी के वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा किया गया।

श्री सतीश शर्मा जी (उपाध्यक्ष स्थानीय समिति) ने उपस्थिति को महर्षि द्वारा बताए वैदिक एवं तर्क के मार्ग को अपनाकर समस्त सामाजिक कुरीतियों के नाश करने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने यह भी कहा कि आज महर्षि दयानन्द के आशीर्वाद से देश-विदेश में डी.ए.वी. संस्थाएँ अपना योगदान दे रही हैं। शांति पाठ से कार्यक्रम का समापन किया गया।

इसी उपलक्ष्य में सामाजिक विज्ञान विभाग द्वारा एक विशेष संभाषण हुआ। जिसमें प्रो. चंदनप्रीत ने कहा कि महर्षि दयानन्द को हमारा सबसे बड़ा उपहार उनकी शिक्षाओं और आदर्शों पर चलना है। उन्होंने आगे कहा कि महर्षि ने पुनः वेदों की ओर लौटने की बात कही और नारी शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों के निवारण, आर्य समाजों की स्थापना द्वारा श्रेयस्कर कार्य किया।

प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा ने अपने उद्बोधन में स्वामी दयानन्द जी के जीवन और कार्यों से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने 'डी.ए.वी.' के अर्थ और इस नाम के पीछे डी.ए.वी. की महान आत्माओं की दूरदृष्टि की छात्राओं को जानकारी प्रदान की। छात्राओं को स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज का अर्थ समझाते हुए कहा कि इस समाज का एकमात्र लक्ष्य है- श्रेष्ठ समाज और श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण करना।

# डी.ए.वी. स्कूल फिल्लौर की 'अटल टिंकरिंग लैब' ने स्कूल के लिए अनुदान अर्जित किया

डीआरवी डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल फिल्लौर को नीति आयोग, भारत सरकार के अटल इनोवेशन मिशन द्वारा विद्यालय में 'अटल टिंकरिंग लैबोरेटरी' की स्थापना के लिए चुना गया। इस मिशन में भारत भर से लगभग तेरह हज़ार (13000) विद्यालयों ने आवेदन किया था। पाँच कठिन एवं चुनौती पूर्ण स्तरों को पार करने के बाद कुल दो सौ सत्तावन (257) विद्यालयों का चुनाव किया गया। इनमें से डी.ए.वी. स्कूल, फिल्लौर एक रहा।

विद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रदूषित वायु को शुद्ध करने का एक संयंत्र किफायती मूल्य में तैयार किया तथा प्रस्तुत किया। एटीएल (अटल टिंकरिंग लैब) विद्यार्थियों को एक ऐसा प्लेटफार्म एवं अवसर प्रदान करता है जिसमें यंत्रों के प्रयोग द्वारा वे विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग तथा गणित से संबंधित कार्य करते हुए अपनी योग्यता का विकास करते हैं। एटीएल द्वारा विद्यालय को दस लाख रुपए की धनराशि लैब की स्थापना के लिए दिए जाएँगे तथा पाँच वर्षों के समय में संयंत्रों को चलाने के लिए भी दस लाख रुपए दिए जाएँगे। प्रधानाचार्य श्री योगेश गंभीर ने कहा कि विद्यालय इस उपलब्धि पर गर्व का अनुभव करता है तथा भविष्य में सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहने को सदा प्रयासरत है।

# आर्य समाज मन्दिर दादों (अलीगढ़) का 70वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर दादों (अलीगढ़, उ.प्र.) का 70वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम के साथ 5 से 7 मार्च 2017 को मन्दिर परिसर में मनाया गया। जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान तथा तपस्वी सन्यासियों की गरिमय उपस्थिति रही। इस धार्मिक कुम्भ मेला में बहुसंख्या में पधारे आर्यजनों ने जीवन उपयोगी उपदेश तथा भजन, श्रवण कर वार्षिकोत्सव की सफलता में चार चाँद लगा दिये। इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में प्रातः महायज्ञ होता रहा। यजमान बनने के इच्छुक, सज्जनों ने पहले अपना स्थान आरक्षित करा लिया था।

आर्य समाज की निर्माणाधीन भव्य यज्ञ शाला के लिए दिल खोलकर सहयोग किया गया।

www.thearyasamaj.org

Registration No. R.N.I. 39/57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 22/23-03-2017

# डी.ए.वी. पूण्डरी (हरियाणा) में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जयंती पर 51 कुण्डीय महायज्ञ संपन्न

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सीनियर विंग पूण्डरी के प्रांगण में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 193वीं जयंती के अवसर पर 51 कुण्डीय विश्वशांति महायज्ञ आचार्य रविंद्र कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में वैदिक मन्त्रोंचारण के साथ सम्पन्न किया गया।

इस महायज्ञ की मुख्य यजमान स्कूल की प्राचार्या श्रीमती साधना बख्शी जी ने यज्ञ में आहूति डालकर विधिवत् महायज्ञ सम्पन्न करवाया। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जसविंद्र आर्य द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचारों को भजनों के माध्यम से उपस्थित कर जन समूह को भाव–विभोर कर दिया तथा स्वामी जी के विचारों को अपने जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी। प्रत्येक हवन कुण्ड पर यजमान के रूप में बारहवीं के छात्रों तथा अध्यापकों को यज्ञ में आहुति डालने के लिए बैठाया गया था। यज्ञ के पश्चात् उनका विदाई समारोह भी आयोजित किया गया।

प्राचार्या ने अपने संबोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन के बारे में उपस्थित छात्र–छात्राओं तथा अध्यापकों को विस्तार से बताया तथा उनके बताए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। संगीत अध्यापक श्री स्वदेश द्वारा भी एक सुमधुर भजन प्रस्तुत किया गया।

इस शुभावसर पर विद्यालय के सम्पूर्ण स्टॉफ सदस्य, छात्र–छात्राओं तथा बारहवीं के सभी विदाई प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी अध्यापकगण तथा गैर शिक्षकगण का विशेष सहयोग रहा। शांतिपाठ के पश्चात प्रसाद वितरण कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

# छात्र-अध्यापकों ने भरे रंग, पिडीलाईट के संग

सोहन लाल डी. ए. वी. शिक्षण महाविद्यालय, अम्बाला शहर के फाईन आर्टस विभाग ने पिडीलाईट के सहयोग से पांच दिवसीय वर्कशाप का समापन किया गया जिसमें महाविद्यालय सभी विद्यार्थियों ने बढ़–चढ कर भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री राम रत्न गर्ग, सदस्य, जिला ग्रीवेन्स कमेटी, अम्बाला उपस्थित थे। माननीय अतिथि के रूप में श्री राकेश गोयल, इन्डस्ट्रीयलिस्ट तथा श्रीमती शकुन्तला देवी अम्बाला ने उपस्थिति दर्ज की। इनके साथ इस अवसर पर पिडीलाईट कम्पनी की तरफ से श्रीमती आशा वर्मा तथा श्रीमान रोहित भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि ने ई–दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया। प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने बताया कि आने वाले होली के त्यौहार के स्वागत में यह वर्कशाप काफी तर्क संगत है। यह वर्कशाप मानो हमारे छात्रों की तीसरी आंख खोल देती है और उनमें छुपी प्रतिभा खिल कर दिखाई देने लगती है तथा इस वर्कशाप का चमत्कारी प्रभाव रहता है।

श्री आर आर गर्ग ने भी अपने वक्तव्य में छात्रों के रचनात्मक कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा सड़क और अध्यापक पथिक को अपने मुकाम तक पहुंचाते है पर स्वयं वहीं रह जाते हैं।

# ओ.एस.डी.ए.वी. कैंथल में मची ऋषि दयानन्द जन्मोत्सव की धूम

ओ.एस.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कैथल में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य में विद्यालय में 11 कुण्डीय यज्ञ का विधिवत आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के सभी अध्यापकों व छात्रों के साथ–साथ गैर शैक्षणिक कर्मचारियों ने भाग लिया। स्कूल की प्रधानाचार्या एवं श्रेत्रीय निदेशिका श्रीमती सुमन निझावन ने मुख्य यजमान की भूमिका निभाई। वैदिक मन्त्रोच्चार की पवित्र ध्वनि व यज्ञ की पावन सुगन्धि से विद्यालय का समूचा वातावरण आनन्दित व सुगन्धित हो उठा।

इस अवसर पर अध्यापकों ने स्वामी दयानन्द जी की पावन स्मृति में छात्रों को कुछ प्रेरक प्रसंग सुनाए। प्रधानाचार्या एवं क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती सुमन निझावन ने महर्षि दयानन्द के जीवन को यज्ञमय जीवन बताया। छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष थे जिन्होंने समाज को पांखडों से मुक्ति दिलाने के साथ साथ देश प्रेम व मानवता की अद्भूत मिसाल कायम की। वे महान योगी थे। अद्भुत व क्रान्तिकारी विचारों के स्वामी थे। आर्य समाज की स्थापना के पीछे उनका महान उद्देश्य था कि सम्पूर्ण मानवजाति को श्रेष्ठ बनाया जाए। किसी व्यक्ति या धर्म से उनकी व्यक्तिगत शत्रुता नहीं थी। उन्होंने तो केवल विभिन्न धर्मों को तर्कहीन और त्रुटिपूर्ण बातों का विरोध किया था और एक आदर्श समाज की नींव रखना ही उनका परम ध्येय था। आज हम सबका परम कर्तव्य बनता है कि हम उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए आत्मिक और सामाजिक उन्नति के भागीदार बनें। वैदिक धर्म तथा भारत माता की जय की उद्घोष, यज्ञ प्रार्थना एवं शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**